

अर्थ संपदा सृजन: विश्वास भरे अदृश्य हाथों की भूमिका

01

अध्याय

பொருளென்னும் பொய்யா விளக்கம் இருளறுக்கும்
எண்ணிய தேயத்துச் சென்று

“धन एक अमेध दीपक है जो प्रत्येक
भूमि को गति प्रदान करता है।”

-थिरुकुरल, अध्याय 76, दोहा 753

செய்க பொருளைச் செறுநர் செருக்கறுக்கும்
எ.கதிற் கூரிய தில்

“धनार्जन करे - अपने दुश्मनों के गर्व को
तोड़ने के लिए कोई हथियार इससे ज्यादा कारगर नहीं है।”

-थिरुकुरल, अध्याय 76, दोहा 759

विदित आर्थिक इतिहास की तीन-चौथाई से अधिक अवधि तक भारत ने वैश्विक स्तर पर आर्थिक संप्रभुता कायम रखी है। संप्रभुता अपनी दक्षता को सुस्पष्ट करती है। भारत की अधिकांश आर्थिक संप्रभुता अवधि के दौरान अर्थव्यवस्था ने अर्थ सृजन के लिए विश्वास के साथ बाजार के अदृश्य हाथों (कारोबारियों) पर भरोसा जताया है। विशेषरूप से, बाजार के अदृश्य हाथ (इनविजिबल हैंड), जिसे आर्थिक लेन-देन के खुलेपन में प्रदर्शित किया जाता है, को विश्वास के साथ जोड़ा गया है जिससे नैतिक एवं दार्शनिक आयामों की मांग करके अंतर्निहित प्रेरणा को प्रोत्साहित किया जाता है।

समीक्षा में यह दर्शाया गया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद परंपरागत साक्ष्य हमारी परंपरागत विचारधारा में समर्थित आर्थिक मॉडल का समर्थन करता है। उदारीकरण के बाद भारत की जीडीपी एवं प्रति व्यक्ति जी डी पी में हुई प्रचण्ड वृद्धि स्टॉक मार्केट में अर्जित होने वाले धन के अनुरूपी है। इसी प्रकार अर्थव्यवस्था के अनेक क्षेत्रों के साक्ष्यों में उन असंख्य लाभों की सौदाहरण व्याख्या की गई है जो बाजार के अदृश्य हाथों को सक्षम बनाकर प्रोद्भूत किए गए हैं। निसंदेह, समीक्षा में यह स्पष्ट है कि बंद क्षेत्रों की बनिस्पत उदारीकृत क्षेत्रों में अधिक तेजी से प्रगति हुई है। वर्ष 2011-13 के दौरान हुई वित्तीय क्षेत्र की घटनाओं एवं परिणामों, जिन्होंने उनका अनुसरण किया है, में द्वितीय स्तंभ-अदृश्य हाथ के समर्थन में विश्वास की आवश्यकता, के बारे में व्याख्या की गई है।

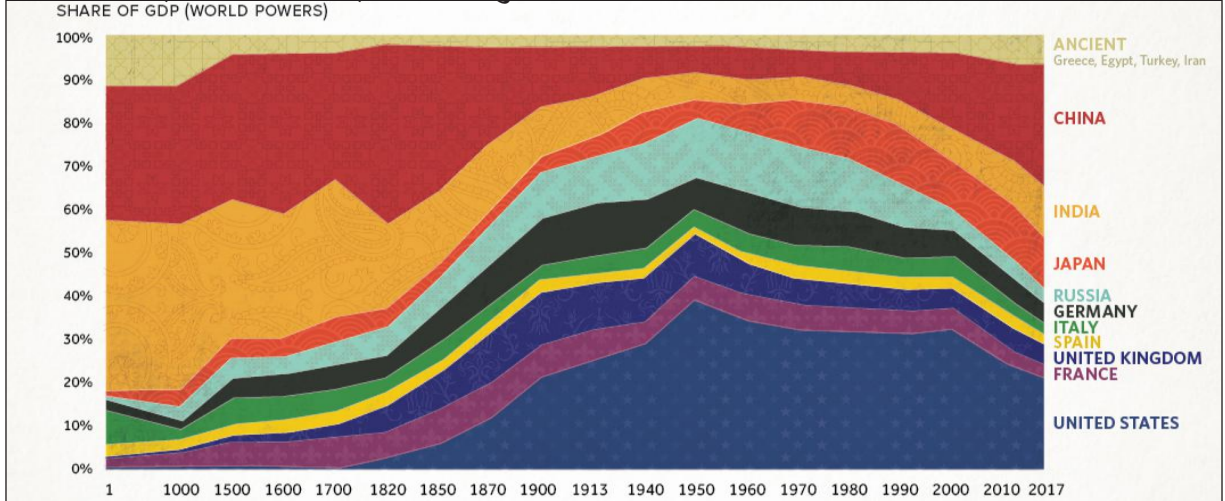
सर्वेक्षण में अनुमान लगाया गया है कि 5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनने की भारत की महत्वाकांक्षा महत्वपूर्ण से बाजार के अदृश्य हाथ एवं विश्वास, जो बाजार का समर्थन करता है, दोनों को सुदृढ़ करने पर निर्भर है। बाजार के अदृश्य हाथ को (प) नए व्यक्तियों को समान अवसर प्रदान करके, निष्पक्ष प्रतियोगिता करके एवं व्यवसाय को सुगम करके (पप) उन नीतियों को अनावश्यक होने पर समाप्त करना जो सरकारी हस्तक्षेपों के माध्यम से बाजारों की शक्तियों को कम आंकती हैं, (पपप) रोजगार सृजन के व्यापार को सक्षम बनाकर (पअ) भारतीय अर्थव्यवस्था के आकार के अनुरूप बैंकिंग क्षेत्र में प्रभावी ढंग से वृद्धि करके, बाजार अनुकूल नीतियों का प्रचार करके सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। विश्वास को सक्षम बनाने के लिए उन नीतियों, जो अंतर्निहित प्रेरणा को प्रोत्साहित करती है, को डाटा, पारदर्शिता एवं प्रभावी प्रवर्तन से अधिकृत करना।

अर्थ सृजन का महत्व

1.1 विदित आर्थिक इतिहास की तीन-चौथाई से अधिक अवधि तक भारत वैश्विक स्तर पर प्रमुख आर्थिक

शक्ति रहा है। यह देश ऐतिहासिक रूप से प्रमुख अर्थ-सृजक रहा है तथा विश्व(मैडिसन, 2007)की जीडीपी का महत्वपूर्ण अंशदाता है जैसा कि चित्र 1 दर्शाया गया है।

चित्र 1: 1एडी से 2003 एडी तक प्रमुख अर्थव्यवसाओं द्वारा विश्व की जी डी पी में योगदान



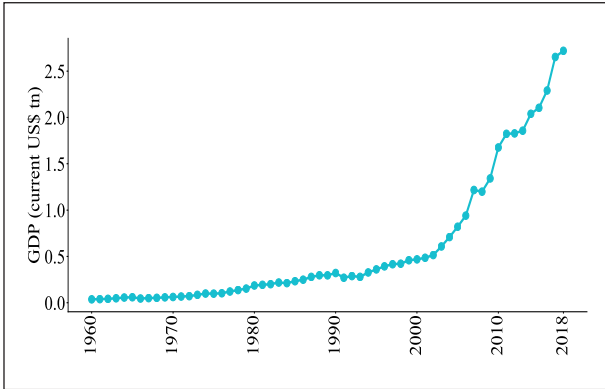
स्रोत 1: मैडीसन ए (2007) टिप्पणी: आरेख के अक्ष पर अरेखीय पैमाना है, विशेषकर 1-500 एडी के लिए, जिसमें भारत की संप्रभुता को कम आंका गया है।

1.2 इतनी लंबी अवधियों तक का आर्थिक नियंत्रण केवल अक्समात न होकर दक्षता को स्पष्ट करता है। इस संदर्भ में, समीक्षा में यह उल्लेख है कि हमारे पुरानी परंपराओं ने सदैव अर्थ-संपदा सृजन की सराहना की है। जबकि कौटिल्य का अर्थशास्त्र एक नियमबद्ध उदाहरण है, अर्थ-संपदा सृजन एक विश्वसनीय मानव व्यवसाय है जिसको अन्य परंपरागत साहित्य के समान मान्यता दी गई है। थिरूक्कुरल, तमिल संत एवं दार्शनिक द्वारा, थिरूवल्लुर द्वारा मानवीय जीवन को समृद्ध बनाने के लिए दोहों के रूप में लिखी गई पुस्तक है, इसके अध्याय 76 के 753वें पद्य में स्वीकार किया गया है: “धन एक अमोघ दीपक है जो प्रत्येक भूमि को गति प्रदान करता है; अपने मालिक के आदेश पर अंधकार को दूर करता है।” इसी अध्ययन के दोहा 759, जो थोरुक्कुरल के दूसरा भाग है, जिसे पोरुल पाल या भौतिक संपदा का सार कहा जाता है; थिरूवल्लुर, घोषणा करते हैं: “धन अर्जित करें - अपने दुश्मनों के गर्व को तोड़ने के लिए कोई हथियार इससे ज्यादा कारगर नहीं है।” यह कहने की आवश्यकता नहीं है, थिरूक्कुरल नैतिक साधनों से धन अर्जित करने का समर्थन करता है - इस

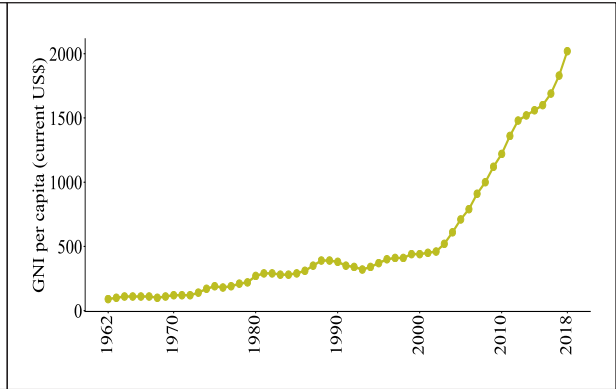
पहलू पर हमने इस अध्याय में बाद में चर्चा की गई है। इस अध्याय का दोहा 754 स्वीकार करता है: “(धन) से शुचिता एवं आनंद मिलता है, कोई क्षति पहुंचाए बिना अर्जित धन।”

1.3 अर्थ सृजन पर बल देने वाली “समृद्ध” परंपरा होने के बावजूद भारत स्वतंत्रता के बाद के अनेक दशकों तक इस मॉडल से विचलित रहा, हालांकि भारत 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद अपनी मूल अर्थचिन्तन पर लौट आया है। उदारीकरण के बाद भारत की जीडीपी (चित्र 2क) एवं प्रति व्यक्ति (चित्र 2ख) जी डी पी में हुई प्रचण्ड वृद्धि स्टॉक बाजार के धनार्जन के अनुरूप है (चित्र 3)। 1991 के बाद संसेक्स में न केवल वृद्धि हुई है, बल्कि इसमें त्वरित गति से वृद्धि हुई है। जबकि 1986 में इसकी शुरुआत से 13 वर्षों में पहले अतिरिक्त 5000 बिंदु को पार किया या है; आगे के वर्षों में प्रत्येक अतिरिक्त लक्ष्य को प्राप्त करने में लगने वाले समय में काफी कमी आई है। यह उल्लेख किया जाता है कि संसेक्स में वृद्धि आधार प्रभाव के कारण नहीं थी। वास्तव में, उच्च वृद्धि उच्च संचयी वार्षिक वृद्धि दर से प्रतिपादित होती है। (सीजीएआर)

चित्र 2क: भारत की जीडीपी (वर्तमान ट्रिलियन अमेरिका डॉलर) (1960-2018)

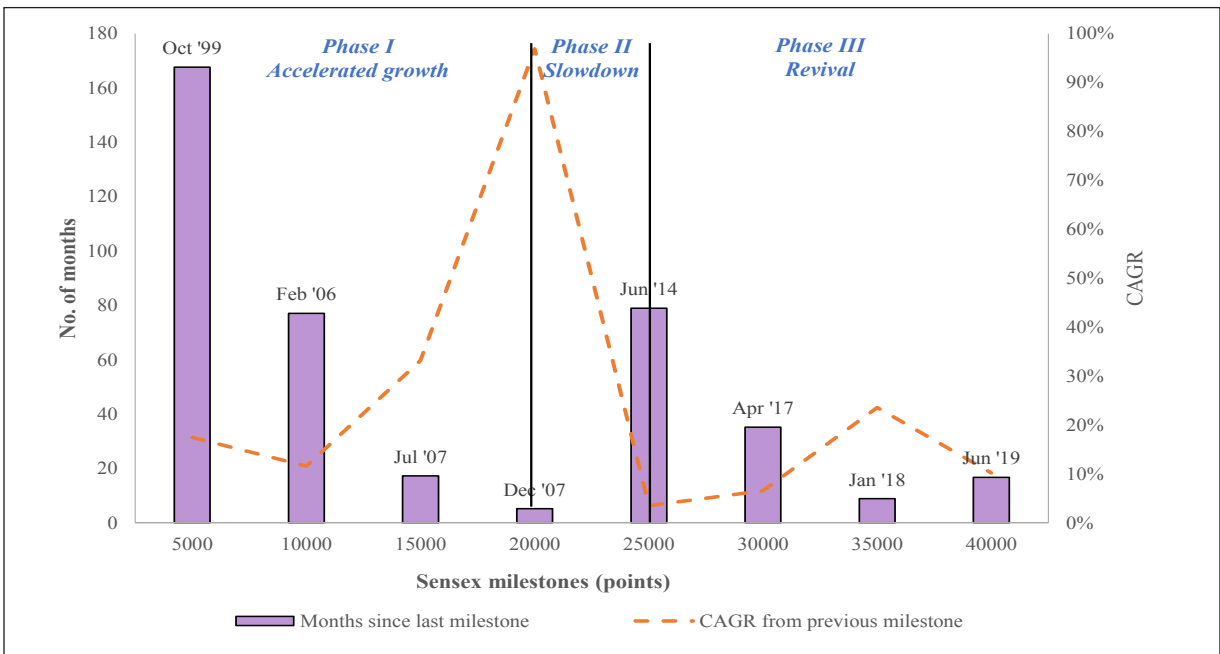


चित्र 2ख: भारत की जीडीपी एवं प्रति व्यक्ति जीडीपी (1960-2018)



स्रोत: विश्व बैंक

चित्र 3: 5000 बिंदु लक्ष्य को पार करने में सेसेक्स द्वारा लिए गए अतिरिक्त महीने



स्रोत: बी एस ई

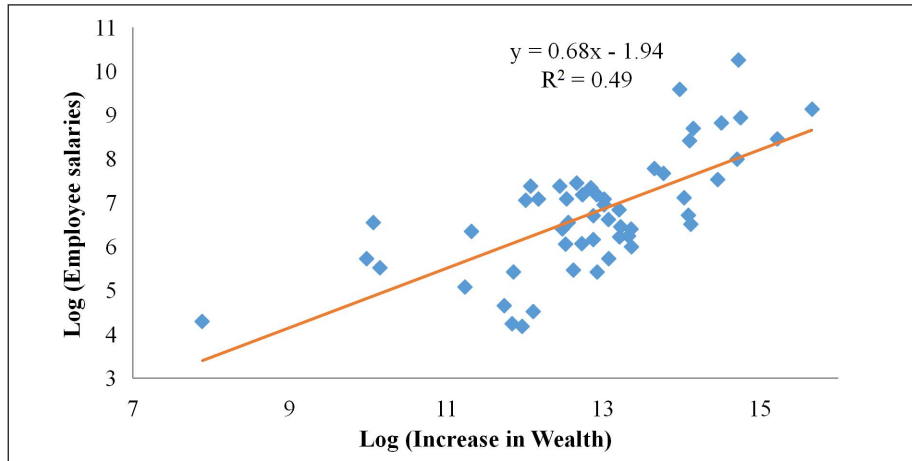
टिप्पणी: प्रत्येक लक्ष्य को पार करने में लगने वाले समय को उस बीते हुए समय से परिभाषित किया जाता है पिछले लक्ष्य पर पहली बार सेसेक्स बंद होने तथा वर्तमान लक्ष्य पर पहली बार बंद होने के बीच बीत गया। यह उल्लेख करें कि सेसेक्स बंद होने वाले मूल्यों पर आधारित होते हैं। बीते हुए समय को कैलेण्डर दिनों की संख्या के रूप में रिकार्ड किया जाता है तथा महीने में 30 दिन मानकर महीनों में बदला जाता है।

1.4 फिर भी, समाजवाद के साथ भारत के “सम्मिलन” को देखते हुए आज के परिवेश में लाभों पर बल देने के लिए यह अनिवार्य है। धन सृजन के लाभों को समझने के लिए, मार्च 2019 में फार्ब्स द्वारा देश के अनुमानित 100 धनी उद्यमियों द्वारा निर्मित कंपनियों को शामिल किया जाता है। अनेक फिल्टरों का प्रयोग करके दूषित धन वाले लोगों को अलग करने के बाद, हम एक दशक (31 मार्च 2009 से 31 मार्च 2019) में उद्यमी

के धन में हुई वृद्धि को उन लाभों से समन्वित करते हैं जो कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ताओं, सरकार आदि समेत अनेक अन्य पणधारियों द्वारा प्रोद्भूत हुए हैं। चित्र 4 में यह दर्शाया गया है कि उद्यमी द्वारा सृजित धन का उन लाभों से सुदृढ़ रूप में सहसंबंध होता है जो उद्यमी की फर्मों में कार्य करने वाले कर्मचारियों से प्रोद्भूत होते हैं।

1.5 चित्र 5 में यह दर्शाया गया है कि उद्यमी द्वारा

चित्र 4: धन अर्जन एवं कर्मचारियों को अदा किया गया वेतन



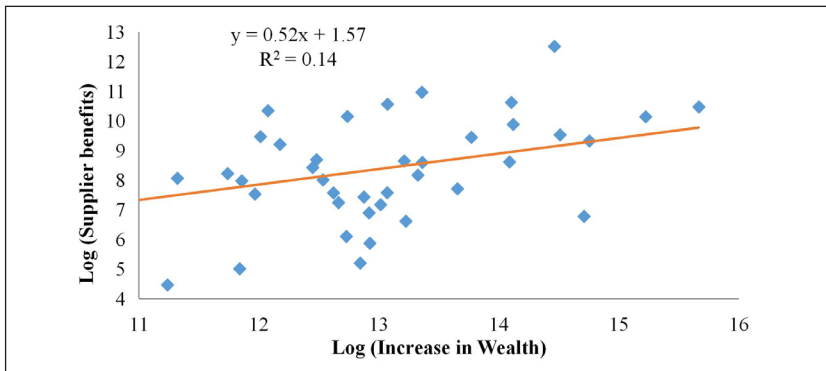
स्रोत: फोर्ब्स, सीएमआई कैपिटालाइन ब्लूमबर्ग तथा समीक्षा गणनाएँ

सृजित धन सुदृढ़ रूप से उद्यमी की फर्मों द्वारा प्रोद्भूत कच्चे माल की लागतों से सहसंबंधित होता है, जो आपूर्तिकर्ता उद्यमी की फर्मों को कच्चे माल की आपूर्ति करके कमाते हैं। चित्र 6 में यह दर्शाया गया है कि उद्यमी द्वारा सृजित धन सुदृढ़ रूप से उद्यमी की फर्मों द्व

ारा किए गए पूंजीगत व्ययों से सहसंबंधित होता है, जो उन लाभों का स्थान लेता है जो पूंजीगत उपस्कर के विनिर्माता उद्यमी की फर्मों को इन उपस्करों की आपूर्ति करने से कमाते हैं।

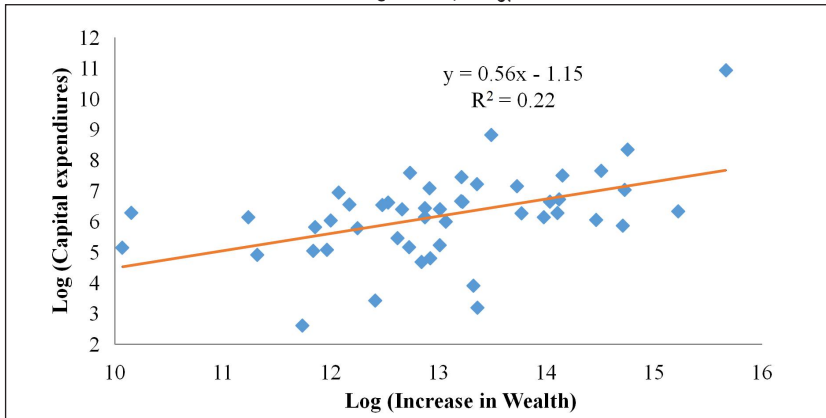
1.6 विदेशी मुद्रा में अर्जित राजस्व से समष्टि आर्थिक

चित्र 5: धन सृजन एवं आपूर्तिकर्ताओं द्वारा कमाए गए लाभ



स्रोत- फोर्ब्स, सीएमआई कैपिटालाइन ब्लूमबर्ग तथा समीक्षा गणनाएँ

चित्र 6: धन सृजन एवं पूंजीगत व्यय

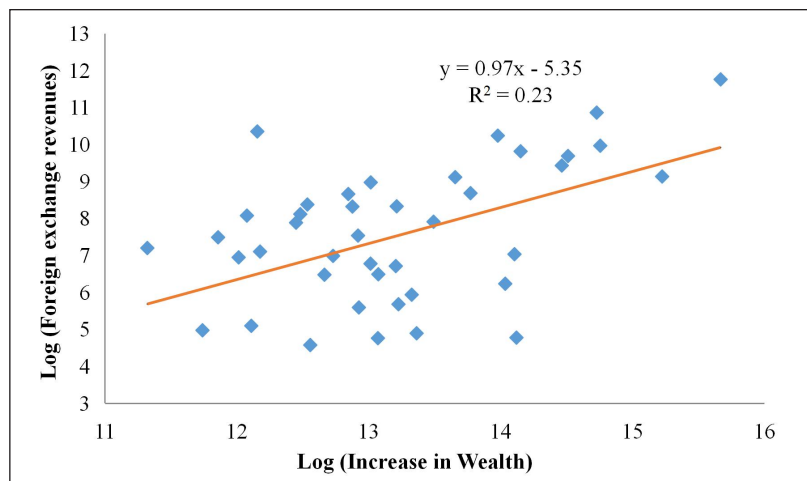


स्रोत-फोर्ब्स, सीएमआई कैपिटालाइन ब्लूमबर्ग तथा समीक्षा गणनाएँ

स्थिरता आती है जिससे देश अपने आयात का भुगतान करने में सक्षम होता है तथा चालू खाते को प्रबंधन योग्य स्तरों पर रख पाता है।

चित्र 7 में यह दर्शाया गया है कि उद्यमियों द्वारा अर्जित धन सुदृढ़ रूप से उद्यमी की फर्मों द्वारा अर्जित विदेशी मुद्रा राजस्व से सहसंबंध स्थापित करता है।

चित्र 7: धन सृजन एवं विदेशी मुद्रा राजस्व

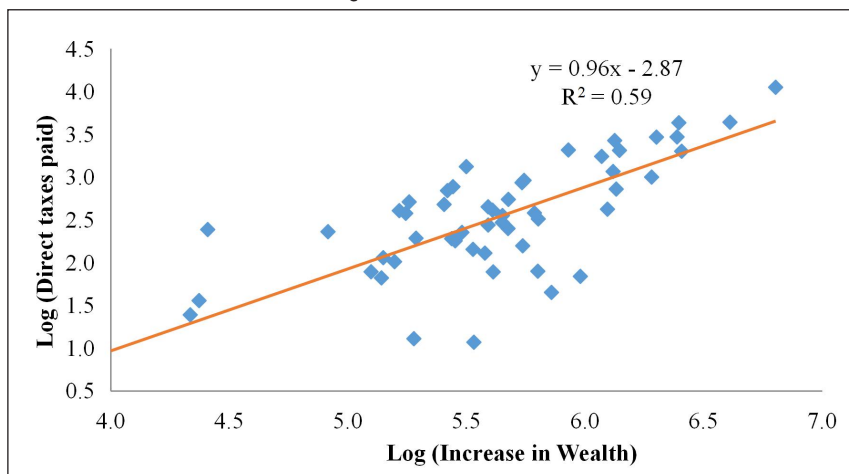


स्रोत: फोर्ब्स, सीएमआई कैपिटालाइन ब्लूमबर्ग तथा समीक्षा गणनाएँ

1.7 अंत में, चित्र 8 यह दर्शाता है कि उद्यमियों द्वारा अर्जित धन आम नागरिकों की सहायता करता है। कर राजस्व के फलस्वरूप सरकार सार्वजनिक वस्तुएं निर्मित करने एवं नागरिकों को बेहतर सेवाओं पर खर्च करती है। हम उद्यमी द्वारा निर्मित धन का प्रदत्त प्रत्यक्ष करों से समन्वय स्थापित करते हैं स्पष्ट रूप से कहा जाता है कि प्रत्यक्ष कर सरकार को प्रोदभूत लाभों को कमतर आंकते हैं, चूंकि इसमें उद्यमी की फर्मों द्वारा

प्रदत्त अप्रत्यक्ष कर कर्मचारियों या आपूर्तिकर्ताओं द्वारा प्रदत्त प्रत्यक्ष शामिल नहीं होते; फिर भी सरकार द्वारा कर राजस्व के खर्च के माध्यम से नागरिकों को प्रोदभूत होने वाले लाभों की अनुमान के रूप में, इस चित्र में देश के सामान्य नागरिकों को प्रोदभूत होने वाले लाभों को दर्शाया गया है। अतः प्रदत्त करों का उद्यमियों द्वारा सृजित धन के प्रबल सहसंबंध धन सृजन से समाज को होने वाले अन्य महत्वपूर्ण लाभ को प्रदर्शित करता है।

चित्र 8: अर्थ सृजन और प्रत्यक्ष कर अन्तर्वाह



स्रोत: फोर्ब्स, सीएमआई कैपिटालाइन ब्लूमबर्ग तथा समीक्षा गणनाएँ

खुली अर्थव्यवस्था के माध्यम से अर्थ सृजन

1.8 किसी भी अर्थव्यवस्था में अर्थ सृजन तब होता है जब सही नीति के विकल्प का अनुसरण किया जाता है। उदाहरण के लिए, कई उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में अर्थ-सम्पदा सृजन और आर्थिक विकास का मार्गदर्शन एडम स्मिथ के 'अदृश्य हाथ' दर्शन के अनुसार किया जाता है जिसमें स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाले कारोबारियों की भूमिका होती है। समाजवाद के प्रति झुकाव के बावजूद सहस्राब्दी के इतिहास में चार दशक की अल्पकालिक अवधि में भारत ने बाजार आदर्श को अपनाया है जो हमारी परम्परागत विरासत का प्रतिनिधित्व करता है। हालांकि, बाजार अर्थव्यवस्था से मिलने वाले लाभों पर संदेह अभी भी बना हुआ है। यह एक घटना नहीं है क्योंकि कई दशकों से समाजवाद के प्रति हमारा 'संयोजन' ने, इस संबंध में अधिकांश भारतीयों को विश्वास दिला दिया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था एक ऐसे आर्थिक मॉडल पर भरोसा कर रही है जो बाजार अर्थव्यवस्था के उन अदृश्य हाथों पर विश्वास करती है जिनका देश की अर्थव्यवस्था में योगदान है। किंतु यह विश्वास सच्चाई से बहुत दूर है।

1.9 वास्तव में, हमारे पारंपरिक आर्थिक दृष्टिकोण ने हमेशा बाजार को सक्षम बनाने और आर्थिक गतिविधियों में बाधाओं को दूर करने पर जोर दिया है। जहां तक आधी सदी पूर्व की बात है, स्पेंगलर (1971) ने लिखा है कि कौटिल्य ने अर्थव्यवस्था में कीमतों की भूमिका को स्वीकार किया है। कौटिल्य (पृष्ठ 149) ने प्रमाणित किया है कि "सम्पदा के मूल आर्थिक क्रियाकलाप होते हैं और इनके अभाव के चलते भौतिक संकट आता है। फलदायी आर्थिक क्रियाकलाप की अनुपस्थिति में, वर्तमान की समृद्धि और भविष्य में होने वाली वृद्धि दोनों के ही विनिष्ट होने का खतरा होता है। एक राजा वांछित लक्ष्यों को हासिल कर सकता है और उत्पादक आर्थिक क्रियाकलापों द्वारा प्रचुर समृद्धि हासिल कर सकता है। (1-9)" कौटिल्य "आर्थिक क्रियाकलापों के सभी अवरोधों के निराकरण" की मांग करते हुए आर्थिक आजादी का समर्थन करता है (सिहाग, 2016)।

1.10 भारत की प्राचीन समृद्धि में अन्तरिक और भारी व्यापार एक मुख्य सहभागी थे दो मुख्य हईवे उत्तरपथा (उत्तरी सड़क) और दक्षिणपथा (दक्षिणी सड़क) और

इसकी सहभागी सड़कें जो उपमहाद्वीप का जोड़ती हैं हालांकि, भारत के लंबे कोसिल लाइन द्वीपो ने इजिप्ट, रोम, ग्रीस, ईरान और पश्चिम अरब, और चीन, जापान, दक्षिण पूर्वी एशिया से पूर्वी तक (सान्यल 2016) के साथ व्यापार किया। इस व्यापार में अधिकतर बड़े कोरपेरेट मंडली जोकि आजकी बहुराष्ट्रीय कंपनियां हैं और जिनको मंदिर बैंको से निधि बद्ध किया गया था। इसलिए व्यवसाय और समृद्धि का अनुसरण भारत की सभ्यता का एक अन्तर भाग है।

1.11 कुछ समय पूर्व मैडिसन (2007) विश्लेषण करता है, कि भारत में एक "पणधारी-मॉडल अस्तित्व में है जिसकी "अर्थशास्त्र" में पुष्टि की गई है जिसमें, उद्यमियों, श्रमिकों और उपभोक्ताओं की समृद्धि में भागीदारी होती है (देवधर, 2018)। अर्थशास्त्र आर्थिक नीति पर एक ग्रंथ के तौर पर, 12वीं शताब्दी तक अर्थव्यवस्था के कामकाज पर गहरा प्रभाव डालता रहा है (ओलिवेल, 2013)। जिसके परिणामस्वरूप, भारत की अधिकांश आर्थिक प्रभुत्व अवधि के दौरान में राज्य के दृश्य हाथों की अपेक्षा बाजार अदृश्य हाथों पर विश्वास जताया गया है।

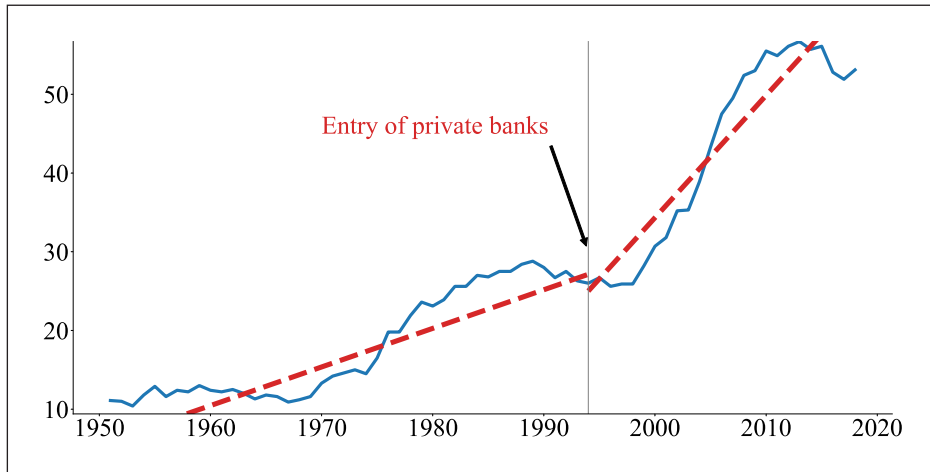
1.12 चूंकि धनार्जन विशेष प्रयास द्वारा ही किया जाता है, आर्थिक समीक्षा 2019-20 की व्यापक विषय-वस्तु धनार्जन और नीतिगत विकल्प हैं जो इसे सक्षम बनाते हैं। इस समीक्षा के भूल में, नीतियां संसाधन व अवरोधों के समूह के अंतर्गत अधिकतम सामाजिक कल्याण की अपेक्षा करती हैं। संसाधन अवरोध नीति निर्माताओं को दक्षता पर ध्यान केंद्रित करने के लिए विवश करते हैं, जो दिए गए संसाधनों यथा भूमि मानव संसाधनों और पूंजी, या कम संसाधन उपयोग द्वारा वैसी ही निर्गत (आउटपुट) का उत्पादन करने पर बल देते हैं।

1.13 1991 के बाद के साक्ष्यों से इस तथ्य का पता चलता है कि आर्थिक उदारीकरण का समग्रतौर पर और सेक्टरों के अंदर संपदा संवर्धन पर व्यापक प्रभाव रहा था। वास्तव में, नीचे प्रस्तुत किए गए साक्ष्य इस बात को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि जिन सेक्टरों को उदारीकृत किया गया था, उनका विकास उदारीकरण से वंचित रहे सेक्टरों की अपेक्षा काफी तेजी से हुआ। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि बाजार अर्थव्यवस्था इस सिद्धांत पर आधारित होती है कि

संसाधनों का इष्टतम आबंटन तब होता है जब नागरिक उन उत्पादों या सेवाओं का स्वतंत्र रूप से चयन करने में सक्षम होते हैं जो वे चाहते हैं। इस तथ्य को दर्शाता है कि निजी क्षेत्र के बैंकों को दिए गए लाइसेंस के माध्यम से इस क्षेत्र को प्रतिस्पर्धा के लिए खोलने के बाद बैंकिंग क्षेत्र में ऋण का उच्च दर पर विस्तार हुआ है। जैसे कि प्रतिस्पर्धा ने नागरिकों के लिए उपलब्ध बैंकिंग विकल्पों का विस्तार किया है, इस क्षेत्र ने सुदृढ़ संवृद्धि का अनुभव किया है। चित्र 10 वर्ष 2003 में प्रतिस्पर्धा के द्वार खोलने के बाद म्यूचुअल निधि सेक्टर में ऐसे ही प्रभावों को दर्शाता है। चित्र 11-14 में, हम खुले क्षेत्र में वृद्धि की समीक्षा करेंगे, जिसमें इसे

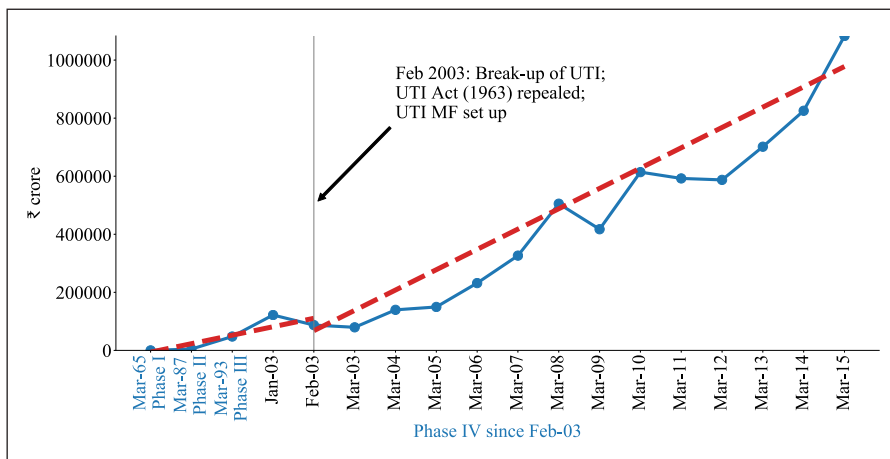
उस क्षेत्र के तौर पर निरूपित किया गया है, जहां पर नागरिक विभिन्न उत्पादकर्ताओं के मध्य किसी का चयन कर सकते हैं, जबकि संवृत सेक्टर के मामले में नागरिक किसी ऐसे विकल्प का चयन नहीं कर सकते। चित्र 11 खुले सेक्टरों (लघु पत्तन) बनाम प्रतिस्पर्धा से वंचित सेक्टर (बड़े पत्तन) में कार्गो प्रमात्रा में संवृद्धि को दर्शाता है। चित्र 12 सीमेंट और इस्पात जैसे खुले सेक्टरों बनाम प्रतिस्पर्धा से वंचित बंद सेक्टर, यथा, कोयले की संवृद्धि को दर्शाता है। चित्र 13 और 14 प्रतिस्पर्धी सेक्टर (सड़क) की प्रतिस्पर्धा से वंचित सेक्टर (रेलवे) के साथ तुलना किये जाने पर संवृद्धि को दर्शाते हैं। चित्र 11-14 तक का अवलोकन करने पर, हमें देखने

चित्र 9: निजी क्षेत्र के बैंकों के आगमन के बाद जी डी पी में घरेलू क्रेडिट में संवृद्धि



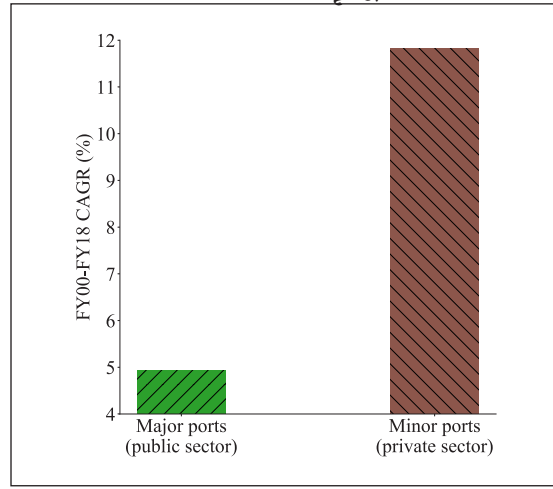
स्रोत:- विश्व बैंक डब्ल्यू डी आई तथा समीक्षा गणना

चित्र 10: 2003 में 'ओपनिंग-अप' के बाद म्यूचुअल फंड सेक्टर में वृद्धि

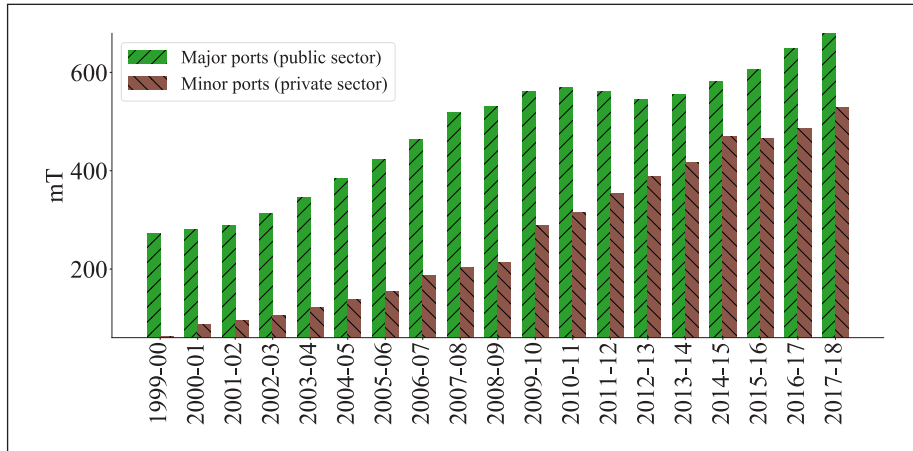


स्रोत:- एमएफआई आकड़े तथा समीक्षा गणना

चित्र 11: पत्तन सेक्टर में वृद्धि: अनावृत (लघु पत्तन) बनाम संवृत (मुख्य पत्तन)
संचयी वार्षिक वृद्धि दर

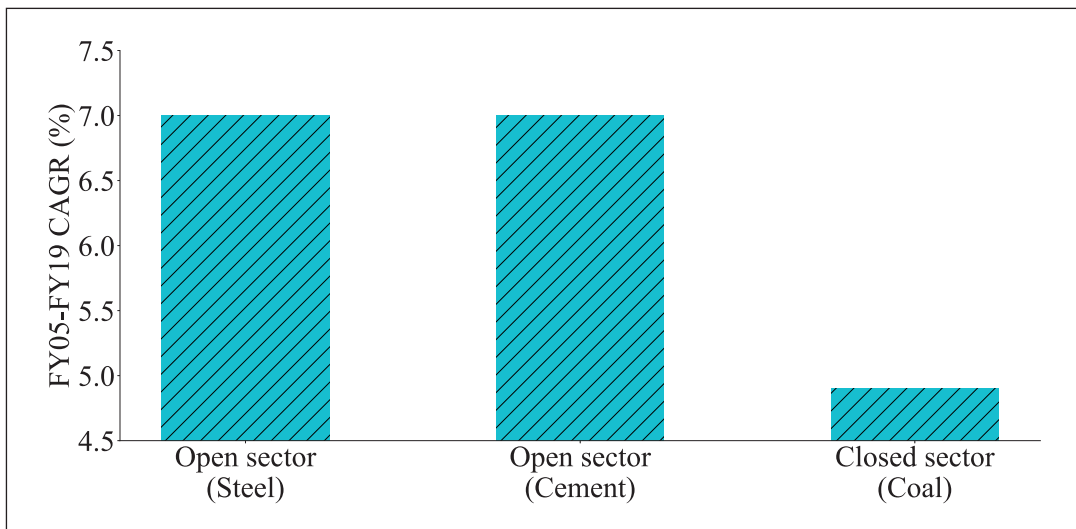


पत्तनों में कार्गो की प्रमात्रा



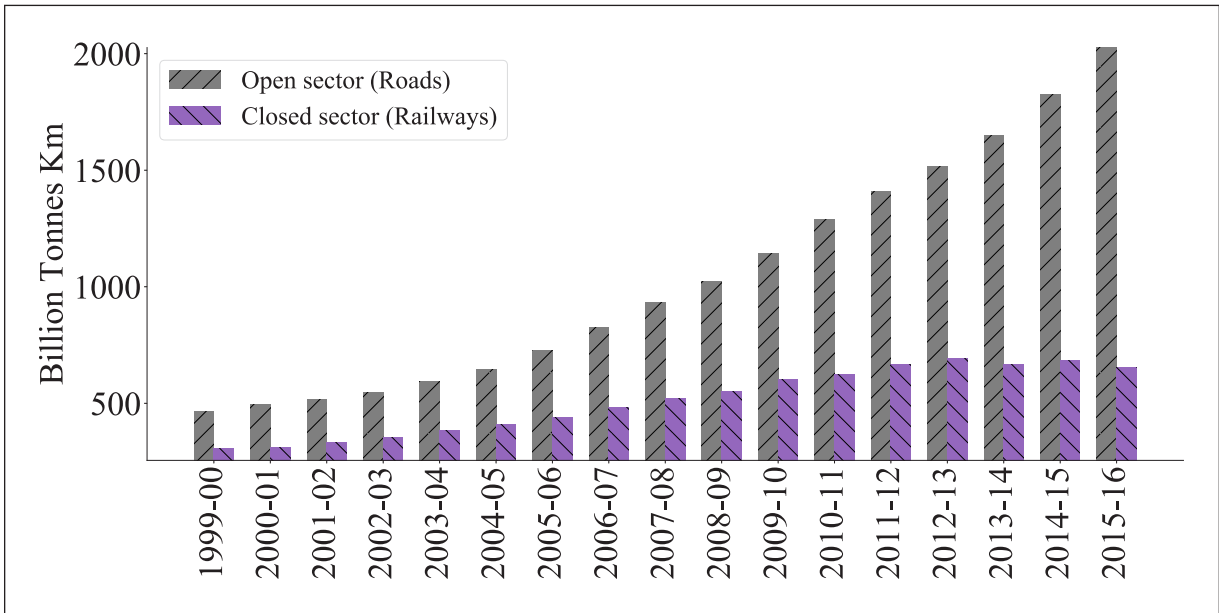
स्रोत:- सीएमआई कम्पनी वार्षिक रिपोर्टे तथा समीक्षा गणनाए

चित्र 12: खुले सेक्टर (इस्पात और सीमेंट) बनाम बंद सेक्टर में वार्षिक वृद्धि दर कोयला



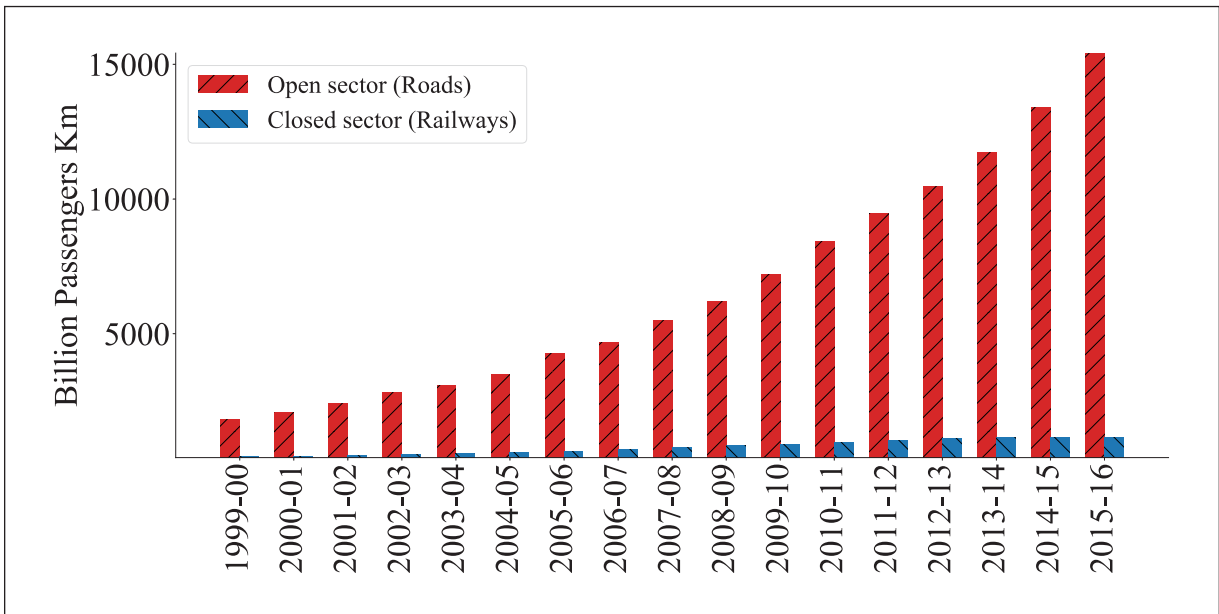
स्रोत:- सीएमआई कम्पनी वार्षिक रिपोर्टे तथा समीक्षा गणनाए

चित्र 13: खुले क्षेत्रों में मालदुलाई यातायात में वृद्धि (सड़के) और बन्द क्षेत्र (रेलवे)



स्रोत:- सीएमआईई कम्पनी वार्षिक रिपोर्टे तथा समीक्षा गणनाए

चित्र 14: खुले क्षेत्रों में यात्री यातायात में वृद्धि (सड़के) और बन्द क्षेत्र (रेलवे)



स्रोत:- सीएमआईई कम्पनी वार्षिक रिपोर्टे तथा समीक्षा गणनाए

को मिलता है कि प्रतिस्पर्धा से वंचित क्षेत्र की अपेक्षा प्रतिस्पर्धा वाले क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण संवृद्धि दर्ज की गई है। 9-14 तक के चित्र इस प्रकार से अर्थव्यवस्था में नागरिकों को आर्थिक विकल्प के चयन में सक्षम बनाने के सकारात्मक प्रभाव पर प्रकाश डालता है।

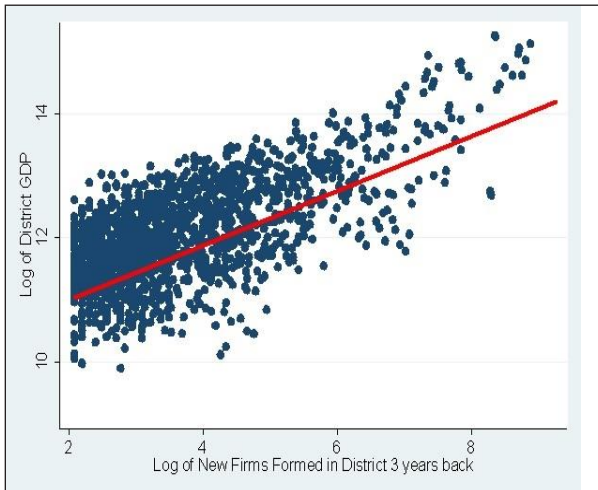
संपत्ति सृजन के लिए उपकरण

1.14 जैसाकि उपर्युक्त तर्क दिया गया है संपत्ति सृजन के लिए दक्षता बढ़ाना महत्वपूर्ण है। दक्षता का प्रमुख आयाम अवसरों से संबंधित है। नये प्रवेशकों के लिए समान अवसर बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जैसा कि

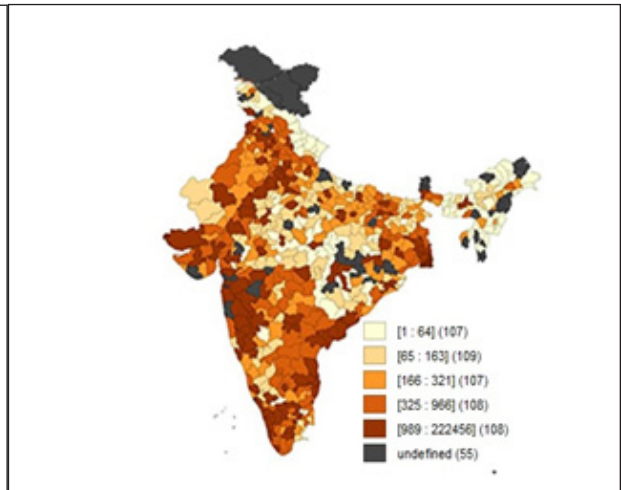
समीक्षा के अध्याय दो में (उद्यमिता एवं निचले स्तर पर संपत्ति सृजन), जिले में नई कंपनियों में 10 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी सकल घरेलू जिला उत्पाद (जीडीडीपी) में 1.8 प्रतिशत की वृद्धि करती है। यह प्रभाव चित्र 15 में दिखाए गए जिलों तथा चित्र 16 में दिखाए गए प्रदेशों दोनों में सतत रूप से फलीभूत होता है। यह प्रभाव जिला स्तरीय जीडीपी पर नई कंपनियों के सृजन को प्रदर्शित करता है जिससे कि निचले स्तर की उद्यमिता न केवल आवश्यकता द्वारा प्रेरित होती है। चित्र 15ख

वास्तव में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि यद्यपि प्रायदीपिय राज्य नई कंपनियों के प्रवेश में प्रभुत्व रखता है, उद्यमिता पूरे भारत वर्ष में बिखरी हुई है तथा यह न केवल कुछ महानगरों तक सीमित है। यह अध्याय विश्व बैंक के उद्यमिता आंकड़ों से आंकड़ों का उपयोग करते हुए दर्शाता है कि नई कंपनियों का सृजन 2014 से नाटकीय रूप से बढ़ा है। हालांकि नई कंपनियों की संख्या 2006-2014 से 3.8 प्रतिशत की संकलित वार्षिक वृद्धि दर पर बढ़ी थी, 2014-2018 तक वृद्धि दर

चित्र 15क उद्यमी क्रियाकलनों का जीडीडीपी पर प्रभाव का आकलन।

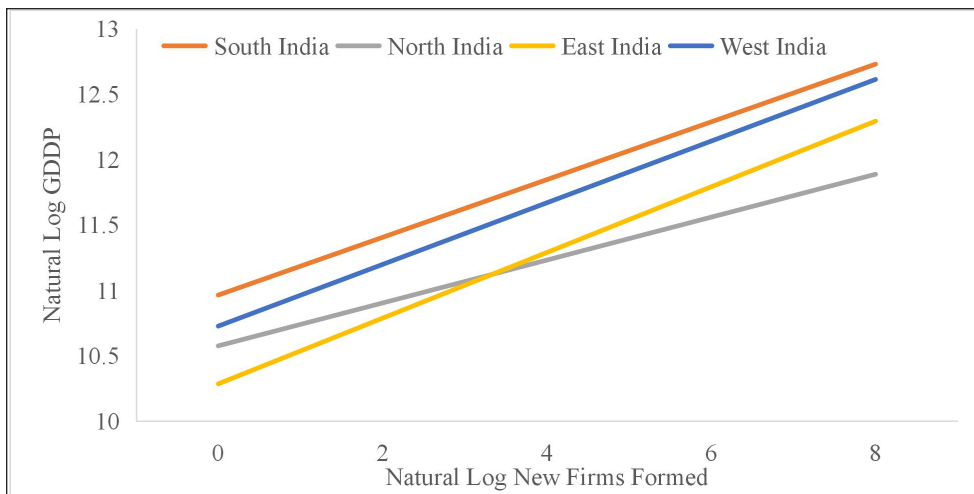


चित्र 15ख नये जिलों के अन्तर्गत नई फर्मों का वितरण



स्रोत: कोपिरेट मामला मंत्रालय (एमसीए) 21 डाटा बेस, सीईआईसी इन्डिया प्रिमियम

चित्र 16 तीन वर्षों के पश्चात जिला स्तर पर जीडीपी का नए फर्मों के संरचना का प्रभाव



स्रोत: कोपिरेट मामला मंत्रालय (एमसीए) 21 डाटा बेस, सीईआईसी इन्डिया प्रिमियम

12.2 प्रतिशत रही है। परिणामस्वरूप 2014 में लगभग 70,000 हजार नई कंपनियों सृजित हुई है, 2018 में लगभग 1,24,000 नई कंपनियों की लगभग 80 प्रतिशत संख्या में बढ़ी है। उद्यमिता में नये प्रवेशकों के लिए समान अवसर दक्ष संसाधन आवंटन एवं उपयोगीकरण, रोजगार वृद्धि को सुकर बनाने, अधिक उत्पाद विविधता के जरिए व्यापार वृद्धि एवं उपभोक्ता अधिशेष प्रोत्साहित करने में समर्थित करता है तथा आर्थिक गतिविधियों की संपूर्ण सीमा को बढ़ाता है।

1.15 अवसरों का प्रमुख आयाम नये प्रवेश को एवं पदस्थ के बीच अवसरों से संबंधित है। जबकि पदस्थ का शक्तिशाली, प्रभावशील तथा ऐसी आवाज होना जिसे शक्ति के गलियारे में सुना जाता है का होना संभावित है, नये प्रवेशक के लिए इन लाभों को पाने की संभावना नहीं है। तब भी नये प्रवेशक नये विचार तथा नवोन्मेष लाते हैं जो कि न केवल अर्थव्यवस्था को प्रत्यक्ष रूप से मदद करते हैं बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से पदस्थ को उनके नीचे रखने के द्वारा अर्थव्यवस्था को मदद करते हैं। अतः आर्थिक अवसरों को अर्थव्यवस्था किस हद तक उचित प्रतियोगिता को समर्थ बनाती है के रूप में परिभाषित किया जाता है जो कि “कारोबारानुकूल” अर्थव्यवस्था को संबोधित करती है। यह शक्ति के गलियारे में के निकट तथा उनके पदस्थ से रेन्ट लेने वाले में पदस्थ के प्रभाव की तुलना में जो कि “प्रोक्रोनी” अर्थव्यवस्था का परिचायक है। प्रत्येक आर्थिक भागीदार के लिए उचित प्रतियोगिता बनाये ऐसी अर्थव्यवस्था को कारोबारानुकूल शब्द के रूप में जोड़ने के लिए इस टेक्सोनॉमी में महत्वपूर्ण है। पृष्ठभूमि को देखते हुए क्या नये प्रवेशकों को पदस्थों जैसी धन सृजन की समान अवसर है? अध्याय तीन (प्रोबिजिनिस विरुद्ध प्रोक्रोनी) साक्ष्य प्रस्तुत करता है। कि भारतीय अर्थव्यवस्था संपत्ति सृजन के लिए स्थापित निवेशकों की तुलना में नये प्रवेशकों के लिए अवसरों के संबंध में कैसे दक्ष रही है। 1991 से आर्थिक घटनाएं मजबूत साक्ष्य प्रदान करती हैं जोकि संपत्ति सृजन करने के लिए प्रतियोगितात्मक बाजार की शक्तियों को खोलने के लिए नये प्रवेशको हेतु सामान अवसर प्रदान करके सहायता करती है। भारत की पांच ट्रिलियन बनने की अभिलाषा प्रो-बिजनेस नीतियों को प्रोत्साहित करने पर महत्वपूर्ण रूप से निर्भर करती है। समीक्षा यह अध्ययन करती है

कि स्थायी प्रोक्रोनीतंत्र की अपेक्षा स्वस्थ प्रोबिजनेसतंत्र अधिक धन सृजित करने के द्वारा मंथन बनाता है। ध्यान दें कि समीक्षा दो प्राणालियों की तुलना करती है तर्क किसी व्यक्ति अथवा निकाय को निर्देशित नहीं किया गया है।

1.16 बाजार अर्थ व्यवस्था में बढ़ना हुआ अर्थ संपदा सभी नागरिकों के लिए कल्याणकारी है। समीक्षा क 1 अध्याय उदारीकरण के पश्चात अर्थव्यवस्था में अर्थसंपदा का प्रमाण प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए सेन्सेक्स 1978 की 100 बेस पाइन्ड्स से 1999 में पहली बार 5,000 मार्क पहुँचा। 1991 में जब भारत एक शसित अर्थव्यवस्था से बाजार अर्थ व्यवस्था में बदली तो यह 1000 प्वाइंस से कम था। तब से जैसे रेखाचित्र में दर्शाया गया है, बाजार रेखाचित्र में दर्शाया गया है, बाजार पूंजीकरण आधारित सूचकांक में अभूतपूर्व विकास देखा गया है। 1999 के बाद के इस अप्रत्याशित विकास 3 चरणों में बांटा गया है। 1999 से 2007 तक के चरण I सेन्सेक्स वृद्धि में गति दिखाई दी, जिसमें हर अगले 5000 पाइंट को हासिल करने में पहले से कम से कम समय लगा। 2007 से 2014 तक के चरण II में सूचकांक वृद्धि में मंदी देखी गई। चरण III की शुरुआत 2014 हुई, जिसमें संरचनात्मक सुधारों की दिशा में पुर्नउद्धार देखा गया। खस तौर से, इस चरण में सेन्सेक्स दो साल में 30,000 मार्क से 40,000 मार्क तक की छलॉक लगाई। जैसे कि रेखाचित्र 3 में सीएजीआर स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं, यह फुर्ती बेस इफक्ट के कारण नहीं हुआ है। असल में उच्चतम सीएजीआर के कारण ही उच्चतम वृद्धि उत्पन्न हुई है। इस तरह से 1991 से अर्थव्यवस्थाओं में अप्रत्याशित धन सृजन हो गया है।

1.17 चयन करने की आजादी मार्केट के जरिए अर्थव्यवस्था में उत्तम अभिव्यक्ति है जहां खरीददार एवं विक्रेता दोनों साथ आते हैं तथा वे कीमततंत्र के जरिए मोलभाव करते हैं। जहां कमी होती है तथा न्यून संसाधन तथा अन्य के उपयोग के बीच चयन किया जाना चाहिए, बाजार प्रतियोगी अवसरों के बीच चयन का समाधान करने के लिए उत्तमतंत्र प्रदान करती है। यह सिद्धांत बाजार अर्थव्यवस्था का आधार है। यह आदेश एवं नियंत्रण उपागम दावा करता है कि वस्तुओं की कीमत विनियमित की जानी चाहिए। हमारी अर्थव्यवस्था में अब तक उदारीकरण पूर्व युग के कुछ अवशेष हैं। समीक्षा

अध्याय चार (उपेक्षित बाजार जब सरकार का हस्तक्षेप उसकी मदद करने से ज्यादा आघात पहुंचाता है) में साक्ष्य प्रदान करता है कि सरकार के हस्तक्षेप बाजार में दक्ष प्रचालन में मदद करने की अपेक्षा इसे आघात पहुंचाते हैं। उदाहरण के लिए फार्मास्युटिकल उद्योग में सरकार ने अविनियमित फार्मूलेशन की अपेक्षा विनियमित फार्मूलेशन की कीमतें बढ़ी हैं। इसके अलावा अविनियमित फार्मूलेशन की आपूर्ति विनियमित फार्मूलेशन की अपेक्षा अधिक है। सरकारी हस्तक्षेप अधिकतर गैर-इरादतन परिणाम जैसे कि कीमत बढ़ोत्तरी करता है जब इसे अविनियमित फार्मूलेशन की अपेक्षा बाजार में तुलना की जाती है। नियंत्रित अर्थव्यवस्थाओं में भिन्न जहां कीमतें सरकार द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था में निर्धारित की जाती हैं, वस्तुओं की कीमतें आपूर्ति एवं मांग बलों की परस्पर क्रिया द्वारा निर्धारित होता है। समीक्षा बाजार विस्तार संपत्ति सृजन के लिए आर्थिक स्वतंत्रता का स्थिर होना पाती है।

1.18 उनके ईष्टतम उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए संसाधन के आवंटन से संबंधित दक्षता के अन्य आयाम भी हैं। चूंकि संसाधन सीमित है राष्ट्र को चयन करना होता है। उदाहरणार्थ जनसांख्यिकीय लाभ को देखते हुए, क्या भारत को श्रम गहन उद्योगों अथवा पूंजी गहन उद्योगों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए? अध्याय पांच (नौकरियों का सृजन एवं नेटवर्क उत्पाद में निर्यातकों को विशेषता देने के द्वारा विकास) इस प्रश्न का जबाब देता है कि हमारी निर्यात नीतियों के जरिए करोड़ों नौकरियों सृजित करने के लिए एक स्पष्ट नीति निर्धारित करने की जरूरत है। समीक्षा “मेक इन इंडिया में विश्व के लिए असेमलिंग इंडिया के एकीकरण द्वारा भारत 2025 तक अच्छी तरह से भुगतान वाली 4 करोड़ नौकरियों तथा 2030 तक 8 करोड़ नौकरियों को सृजित कर सकता है, यह पाता है। हमारी व्यापार नीति समर्थकारी होनी चाहिए क्योंकि निर्यात में वृद्धि भारत में नौकरियों के सृजन के लिए एक आवश्यक रास्ता प्रदान करती है।

1.19 जैसेकि अध्याय-6 (भारत में कारोबार करने की सुगमता को सुधारना) में चर्चा की गई है, कारोबार करने की सुगमता सुधारों से विगत पांच वर्षों में निरंतर बढ़ गई है जिसने अधिक आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान की है। भारत ने 2014 में 142 से 2019 में 63 तक विश्व बैंक

की कारोबार करने की रैंकिंग में लम्बी छलांग लगाई है। द डुइंग बिजनेस 2020 रिपोर्ट ने भारत को दस अर्थव्यवस्थाओं में से एक रूप में पहचाना है जिसने की सबसे ज्यादा सुधार किया है।

1.20 अब भी, कारोबार करने को सुगम बनाने में सुधारों की गति को बढ़ाए जाने की आवश्यकता है ताकि भारत मैट्रिक पर शीर्ष 50 अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो सके। भारत निरंतर कुछ मानदण्डों, जैसाकि कारोबार शुरू करने की आसानी, संपत्तियों का पंजीकरण, करने, कर अदा करने; तथा संविदाओं को लागू करने में पीछे रहता है। अध्याय 6 विश्व बैंक के सर्वेक्षण द्वारा लिए गए उपागम के बाहर भारत के कार्यनिष्पादन को अवरुद्ध करने वाले महत्वपूर्ण मामलों को चिन्हित करता है। यह निर्यात एवं आयात आपूर्ति में विशिष्ट बिन्दुओं को भी प्रदर्शित करता है जो कि असाधारण देरी एवं व्यवधानों को महसूस करता है। यद्यपि, प्राथमिक आर्थिक प्रचालक योजना ने पंजीकृत इलेक्ट्रॉनिकस निर्यातों/आयातों के लिए प्रक्रिया को आसान किया है। यहा और अधिक काम किया जाना है। कारोबार विनियमों को आसान बनाने के लिए समग्र मूल्यांकन एवं सतत प्रयास कारोबार को पनपने के लिए परिवेश बनाना का प्रमुख संरचनात्मक सुधार होगा जोकि भारत को 8-10 प्रतिशत प्रतिवर्ष की सतत दर से बढ़ने में समर्थ बनाएगा। इसमें प्रतिक्रिया चक्र, निगरानी एवं निरंतर समायोजन के उपागम की आवश्यकता है।

1.21 अर्थव्यवस्था में दक्षता बढ़ाने के लिए एक दक्ष वित्तीय क्षेत्र अति महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक रूप से, विगत 50 वर्षों में, शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं को उनके बैंकों द्वारा हमेशा सामर्थ्यपूर्ण सहायता मिलती रही है। यू.एस को सुपरपावर अर्थव्यवस्था बनाने में यू.एस बैंकिंग तंत्र की सहायता अच्छी तरह से जानी जाती है। इसी तरह अस्सी के दशक में जापानी अर्थव्यवस्था के अच्छे दिनों के दौरान जापान के पास तब के शीर्ष 25 बड़े बैंकों में से 15 बैंक थे। हालही के समय में, जैसे चीन अर्थव्यवस्था सुपरपावर के रूप में उभरा है, यह इसके बैंकों द्वारा निपुणतापूर्वक समर्थित रहा है विश्व के चार सबसे बड़े बैंक चीन के बैंक हैं। विश्व का सबसे बड़ा बैंक चीन औद्योगिक एवं वाणिज्यिक बैंक लगभग 5वे अथवा 6वे स्थान के बड़े बैंकों से दो गुणा बड़ा है जो कि क्रमशः जापानी एवं अमरीकी बैंक हैं।

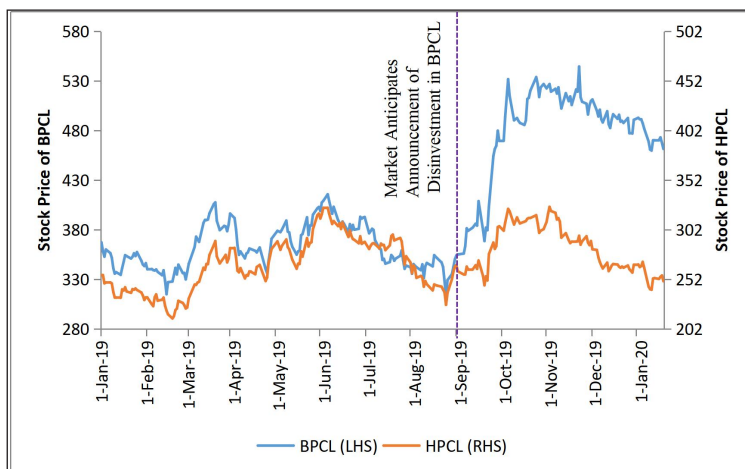
1.22 अध्याय 7 (बैंक राष्ट्रीयकरण की स्वर्णजयंती: टेंकिंग स्टॉक) दिखाता है कि भारत का बैंकिंग क्षेत्र इसकी अर्थव्यवस्था के आकार को देखते हुए बेहद गैर तौर पर अवकिसित है। उदाहरणार्थ; भारत के पास सिर्फ एक ही बैंक है जो कि वैश्विक शीर्ष 100 में है उन देशों के समान ही जो कि अपने आकार का भिन्न है: फिनलैंड (लगभग 1/11वाँ), डेनमार्क (लगभग 1/8वाँ) नार्वे (1/7वाँ) आस्ट्रिया (लगभग 1/7वाँ) एवं बेल्जियम (लगभग 1/6वाँ)। स्वीडन (1/6वाँ) तथा सिंगापुर (1/8वाँ) जैसे देशों से भारत का आकार वैश्विक बैंको की संख्या जैसाकि, भारत के पास क्षमता है, से तीन गुना है। बड़ी अर्थव्यवस्था को इसके विकास करने में सहायता करने के लिए दक्ष बैंकिंग क्षेत्र की आवश्यकता है। चूकि भारतीय बैंकिंग प्रणाली में पीएसबी का बाजार हिस्सा 70 प्रतिशत है, भारतीय अर्थव्यवस्था को सहायता करने की जिम्मेदारी तथा इसके आर्थिक विकास को प्रोत्साहन देना भी इन पर निर्भर करता है। अब भी, प्रत्येक कार्यनिष्पादन पर पीएसबी अपने सहकर्मी समूह की तुलना में अप्रभावी है। अध्याय कुछ हल सुझाता है जो कि पीएसबी को अधिक दक्ष बना सकते हैं ताकि ये 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था के लिए संपत्ति सृजन में राष्ट्र को सही रूप से सहायता करने में सक्षम बन सकें।

1.23 छाया बैंकिंग क्षेत्र जो कि उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है, वित्तीय अर्न्तमध्यस्थता के महत्वपूर्ण अनुपात हेतु उत्तरदायी है विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां परंपरागत बैंकिंग क्षेत्र घुसने में सक्षम नहीं है। अध्याय 8 (एनबीएफसी

क्षेत्र में वित्तीय कमजोरी) छाया बैंकिंग क्षेत्र के स्वास्थ्य जिसके द्वारा वित्तीय क्षेत्र में निगरानी तंत्र जोखिम का पता लगाने के लिए उपचार का निर्माण करता है।

1.24 अध्याय 9 (निजीकरण एवं संपत्ति सृजन) उल्लेखनीय दक्षता लाभों जिनकी प्राप्ति सरकार की बजाए निजी क्षेत्र द्वारा कारोबार से होती है, को दिखाने के लिए निजीकरण के पश्चात् केन्द्रीय सरकारी क्षेत्र उद्यम (सीपीएसई) के प्रदर्शन में बदलाव का उपयोग करता है। चित्र 17 भारत पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) के निजीकरण की घोषणा का उपयोग करते हुए इसके सहकर्मी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) की तुलना को सम्मोहक चित्रण प्रदान करता है। हम सितंबर 2019 के बाद से जब से बीपीसीएल के निजीकरण का समाचार आया था तब से बीपीसीएल एवं एचपीसीएल के शेयरों की कीमतों में अंतर पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। बीपीसीएल एवं एचपीसीएलकी तुलना यह सुनिश्चित करती है कि स्टॉक मार्केट में अथवा तेल उद्योगों में किन्हीं वृहत गतिविधियों का प्रभाव 'नेट आऊट' हो जाता है। हम चित्र 17 में देखते हैं कि एचपीसीएल एवं बीपीसीएल की स्टॉक कीमत सितंबर तक समसामयिक रूप से आगे बढ़ी थी। तथापि, इनके स्टॉक की कीमतों में विचलन बीपीसीएल के विनिवेश की घोषणा के पश्चात् शुरू हुआ। बीपीसीएल की स्टॉक कीमतों में बढ़ोत्तरी जब हम समान अवधि में एचपीसीएल की कीमतों में तुलना करते हैं तब लगभग 33000 करोड़

Figure 17: Comparison of Stock Prices of BPCL and HPCL



Source: BSE, Survey Calculations

¹ <https://www.livemint.com/market/mark-to-market/why-privatization-of-bpcl-will-be-a-good-thing-for-all-stakeholders-1568309050726.html>

की बीपीसीएल की शेयर धारिता ईक्विटी के मूल्य में बढ़ोत्तरी में परिणत होता है

चूँकि इस अवधि के दौरान कर्मचारियों एवं उधारदाताओं सहित अन्य स्टॉकधारकों के मूल्य में कोई दर्ज बदलाव न था, यह 33000 करोड़ की बढ़ोतरी बीपीसीएल के संपूर्ण कंपनी मूल्य में स्पष्ट बढ़ोतरी में परिणत होती है तथ इसके द्वारा इस राशि के द्वारा राष्ट्र की संपत्ति में बढ़ोत्तरी होती है।

1.25 इस अध्याय में विश्लेषण यह दर्शाता है कि प्रमुख वित्तीय संकेतक जैसे कि औसतन निवल मूल्य, निजीकृत सीपीएसई की संपत्तियों पर निवल लाभ एवं प्रतिलाभ सहयोगी कंपनियों की तुलना में निजीकरण अवधि पश्चात में उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है। यह सुधरा हुआ प्रदर्शन अलग अलग रूप से ली गई प्रत्येक सीपीएसई के लिए भी सत्य है

1.26 देश में संपत्ति का अंतिम माप देश की जीडीपी है। निवेशक अर्थव्यवस्था में निवेश करने का तय करते हुए देश के जीडीपी विकास को ध्यान रखता है, इसके परिमाण के बारे में अनिश्चितता निवेश को प्रभावित कर सकती है। इसलिए, 2011 में भारत की जीडीपी अनुमान प्राविधिकी में बदलाव के पश्चात भारत की जीडीपी वृद्धि दर के बारे में हाल ही के विवाद ने महत्ता हासिल की। सांख्यिकी एवं अर्थमितिपरक विश्लेषण का ध्यानपूर्वक उपयोग करते हुए जो कि इस मामले की महत्ता से न्याय करता है, अध्याय 10 (क्या भारत की जीडीपी बढ़ा चढ़ा कर बता दी गई है? नहीं।) भारत की जीडी पी वृद्धि के गलत अनुमान का कोई साक्ष्य नहीं पाता है।

1.27 अर्थव्यवस्था में संपत्ति सृजन माल एवं सेवाओं को खरीदने के लिए उसी अधिक क्रय शक्ति के माध्यम से आम आदमी की जीविका अंततः बढ़ानी चाहिए। आम आदमी के लिए पोषक खाद्य की एक प्लेट-एक थाली-एक मूल मद है जिसका प्रत्येक दिन प्रत्येक व्यक्ति सामना करता है। अतः इसे सूचित करने के लिए बेहतर रास्ता नहीं हो सकता है कि अथवा आर्थिक नीतियां आम आदमी को प्रतिदिन थाली के लिए जो अदा करता है को बढ़ानी हैं। अध्याय 11 (थाली नामिक्स: भारत में खाने की प्लेट का अर्थशास्त्र) अप्रैल

2006 से मार्च 2019 तक भारत में 25 राज्यों/संघ शसित प्रदेशों में लगभग 80 केन्द्रों में थाली की सूची का निर्माण करता है। समीक्षा थाली की कीमत स्थिरता के मूल संकेतकों का उपयोग करते हुए यह साक्ष्य को प्रस्तुत करती है कि खाने की एक पोषक प्लेट अब आम आदमी के लिए अधिक सस्ती हो गई है।

1.28 यह अध्याय अर्थशास्त्र को आम आदमी से जोड़ता है। यह अध्याय के माध्यम से आर्थिक समीक्षा 2018-19 ने “नज का व्यवहारात्मक अर्थशास्त्र” पर मानव को मानव समझने के लिए विनम्र प्रयास किया था; नकि स्वहित प्रेरित आटामैटोन्स के लिए, ताकि आम आदमी अपनी स्वभावगत प्रतिक्रियाएं कर सके तथा इसे उपयोग करने के लिए जोकि अर्थव्यवस्था नीति के उपकरण के रूप में व्यवहारात्मक बदलाव को समझने के लिए आसान प्रिन्स के रूप में प्रयोग कर सके। आर्थिक समीक्षा 2019-20 ऐसा कुछ उपयोग करते हुए ‘प्रत्येक दिन की खाने की थाली’ से आम आदमी की अर्थव्यवस्था को संबंधित करने का यह सहस प्रयास जारी रखती है।

इस शताब्दी के पहले के वर्षों में विश्वास का टूटना

1.29 बाजार अर्थव्यवस्था में भी राज्य को अदृश्य हाथ की सहायता करने के नैतिक हाथ सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। जैसा कि सैंडल (2012) तर्क देते हैं। बाजार सभी की मत पर लाभों के अनुसरण में नैतिकता से विचलित हो सकते हैं। विश्वास औपचारिक एवं अनौपचारिक वित्तपोषण, दोनों में सकारात्मक रूप से योगदान देता है (ग्यूसो, और अन्य, 2004) विश्वास को दक्ष परिणाम प्राप्त करने के लिए बैंकिंग प्रणाली हेतु महत्वपूर्ण स्नेहक के रूप में समझा जाता है।

1.30 प्राचीन दार्शनिक विश्वास को समाज का एक महत्वपूर्ण अवयव मानते हैं तथा यह संपुटित करते हैं कि नैतिक एवं दार्शनिक आयामों का अनुरोध करके विश्वास को और बढ़ाया जा सकता है। इन लाइनों के साथ समीक्षा में “विश्वास” एक सार्वजनिक वस्तु है (जिसमें व्यापक प्रयोग से वृद्धि होती है) की शुरुआत की है। (बॉक्स 1 देखें) बॉक्स 1 अरस्तु जैसे दार्शनिकों की

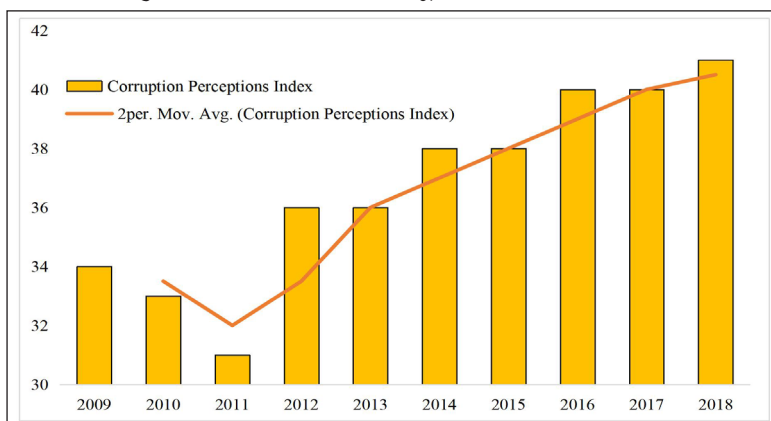
² See Gneezy Rustichini (2000a, 2000b), Gneezy, Meier, and Rey-Biel (2011), Meier (2000a, 2000b) for economic research on intrinsic motivation.

व्याख्या करता है तथा कम्प्यूशियक विश्वास को “अच्छे कानून अच्छे नागरिक बनाते हैं” की व्याख्या करते हुए सार्वजनिक वस्तु के तौर पर देखता है। जिंगल्स (2011) तथा से पियन्जा एवं जिंगल्स (2012) रेखांकित करते हैं कि वैश्विक वित्तीय संकट बाजार अर्थव्यवस्था में विश्वास में विफलता का स्पष्ट उदाहरण है। हमारे आसपास भी 2011 की घटनाओं ने इसी प्रकार की छवि प्रस्तुत की।

1.31 भ्रष्टाचार धारणा सूची, जिसको ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल पूरे देशों में पता लगाती है, यह दर्शाती है कि भारत में हाल के वर्षों में 2011 में निम्नतम बिन्दु पर था। 2013 से, भारत ने इसी सूची पर उल्लेखनीय सुधार किया है (चित्र 18) विश्वास घाटे की घटना जोकि इस अवधि के दौरान भारत में घटी बहुत से अन्य मापको में भी

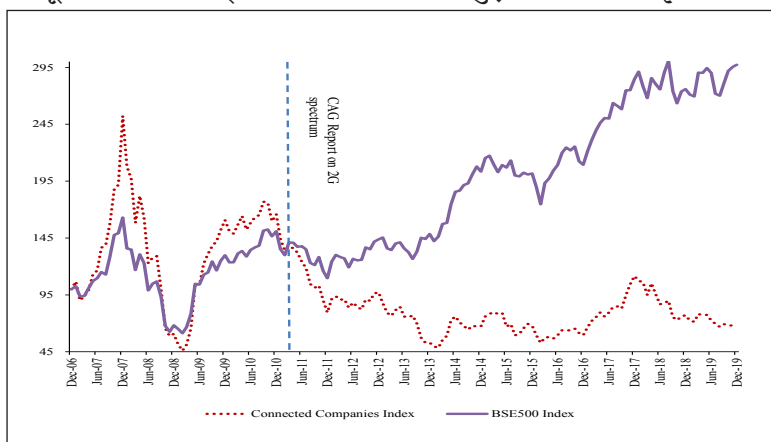
प्रदर्शित होती है। जैसा समीक्षा अध्याय 3 दर्शाता है, 2011 से पहले, इसने कंपनियों तथा इसकी शेयरधरियों को कंपनियों के संस्थापक का राजनैतिक संबंध से लाभ होता था। राजनैतिक संबद्धित कम्पनियों की सूची ने बीएसई 500 सूची में निरंतर बेहतर प्रदर्शन किया था (चित्र -19)। राजनैतिक संबद्धित कम्पनियों व्यवस्थित रूप से नैतिक समर्थन वाली कंपनियों से अधिक कमाया था। अध्याय 3 यह भी प्रदर्शित करता है कैसे 2014 से पहले प्राकृतिक संसाधनों के मनमाने आवंटन ने लाभार्थियों द्वारा भाड़ाखोरी को बढ़ावा दिया था। जाने की तुलनात्मक रूप से 2014 के पश्चात प्राकृतिक संसाधनों की प्रतियोगात्मक नीलामी ने ऐसी भाड़ाखोरी के मौकों को हटा दिया है।

चित्र 18: भारत हेतु भ्रष्टाचार अनभिज्ञता सूचकांक भ्रष्टाचार अनभिज्ञता सूचकांक



स्रोत: ट्रांसपेरेंसी अंतर्राष्ट्रीय

चित्र 19: 2011 से पूर्व और पश्चात् राजनीतिक रूप से जुड़ी फर्मों द्वारा सृजित निवेशक संपत्ति सृजन



स्रोत: एंबिट प्राइवेट लिमिटेड नोट जनवरी, 2007 में दोनों संख्या को 100 तक क्रमबद्ध किया गया

Note: 1) The connected companies index is an aggregate market cap index which has been rebased and is adjusted for demergers, 2) 70 companies with political dependence and connectivity as on Dec'06 as per Ambit analysts.

बॉक्स 1: विश्वास एक सार्वजनिक वस्तु के रूप में: आरिस्टोल और कौटिल्या विरूद्ध मैकियावली

जन कल्याण के रूप में भरोसा जिसके प्रयोग में इजाजा होने से वृद्धि होती है” के विचार को प्रतिपादित किया है। लोक कल्याण के भरोसे को समर्थन के अभिलक्षणों के साथ अवधारणा के रूप में लिया जा सकता है। अर्थात् नागरिक बिना किसी प्रत्यक्ष वित्तीय लागत पर इसका लाभ उठा सकते हैं। विश्वास में प्रतिद्वंद्विता नहीं होती अर्थात् किसी अन्य नागरिक को इस जनहित को देने की सीमांत लागत शून्य होती है। यह स्वीकार्य भी होता है अर्थात् सभी नागरिकों के लिए सामूहिक आपूर्ति का अर्थ यह है कि इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। अन्य सार्वजनिक वस्तुओं की तरह विश्वास भी बार-बार प्रयोग करने से बढ़ता है तथा इसीलिए इसे बनने में समय लगता है। (गमबेरा, 1998) विश्वास की कमी बाह्यता को दर्शाता है जहां निर्णय करने वाले अपने कार्यों के कुछेक परिणामों के लिए उत्तरदायी नहीं होते।

अर्थव्यवस्था में विश्वास के महत्व को देखते हुए कोई भी व्यक्ति इससे निपटने वाले आर्थिक सिद्धांत, विशेषकर लेन-देन लागत अर्थशास्त्र या अपूर्ण संविदाओं के साहित्य की प्रत्याशा कर सकता है। हालांकि यह विषय नहीं है। नाबल पुरस्कार विजेता ओलिवर विलियमसन, जिसने लेन-देन लागत अर्थशास्त्र में विशेषज्ञता हासिल की है, का स्पष्टकथन है कि आर्थिक कार्यकलाप में विश्वास नाम की कोई चीज नहीं है यह बेहद अनावश्यक है और उस वाणिज्यिक लेनदेन की व्याख्या करने में “विश्वास” शब्द का प्रयोग भ्रामक हो सकता है जिसमें अधिक प्रभावी लेन-देन के समर्थन में लागत-प्रभावी उपाय तैयार किए गए हैं। (विलियमसन, 1993 पृ. 463) विलियमसन का मानना है कि प्रोत्साहन एवं अधिशासन संरचनाओं पर आधारित गणनात्मक सहयोग की भूमिका होती है: यदि आर्थिक एजेंटों को आर्थिक संबंधों, जिनके वे घटक हैं, की अधिक दूरगामी समझ है तो उन पर उनके लिए उल्लेखित पक्षपाती में कियावली सिद्धांत की बजाए मैकियावली सिद्धांत हथियाना लागू नहीं होता। उनका तर्क है कि गणनात्मक प्रचालन की अधिका संभावना उस समझ होती है जब एजेंटों के पास लंबी अवधि हो, जो विश्वास के सच होती है।

समान रूप से, कोई भी व्यक्ति यह अपेक्षा करेगा कि विश्वास को अपूर्ण संविदा साहित्य में व्यक्त किया जाना चाहिए, अपूर्ण संविदा माडल का आविष्कार नोबल पुरस्कार विजेता ओलिवर हर्ट ने अपने सहयोगी लेखकों सेनफोर्ड ग्रासमैन, और जॉन मूर के साथ किया है। वे यह दलील देते हैं कि प्रत्येक संभावित आपात स्थिति में क्या किया जाना होता है इस बात को संविदा में विनिर्दिष्ट नहीं किया जा सकता। इसलिए यह अपेक्षा कना उचित है कि विश्वास को आदर्श के रूप अभिव्यक्त किया जाए, चूंकि आर्थिक एजेंट केवल उन्हीं अपूर्ण संविदाओं में भाग लेने को जोखिम उठाएंगे, यदि ऐसे मैनेर में अप्रत्याशित परिणाम को स्वीकार करने के लिए उनके सहयोगी उन कर विश्वास करें कि उस संविदा से बेहतर आर्थिक आय मिलेगी।

हालांकि, जब अपूर्ण संविदाकारी साहित्य स्वतः, प्रवर्तनकारी प्रत्यक्ष संविदाओं का विश्लेषण करता है जहां पक्षपाती व्यवहार अर्थात् अवसरवाद, किसी भी पक्ष के हित में लंबी अवधि के अभिकलन के लिए उद्यम द्वारा प्रतिबंधित किया जाता है। (बेकर एट एल 1998)

लेन-देन लागत या अपूर्ण संविदाकारी पैटर्न की तुलना में व्यक्तियों की न केवल भौतिक आवश्यकताएं होती हैं। मानवीय दृष्टि प्रत्यक्ष रूप में बेनाबाऊ एवं रिशोल (2006) के स्केमा से संबंधित है जहां व्यक्ति स्वयं को संकेत देने के लिए कार्रवाई करते हैं कि वे कौन हैं। लोगों के आत्म-सम्मान की आवश्यकता को “विश्वसनीय” बनाने के लिए उनकी अंतर्निहित प्रेरणा से जोड़ा जाता है।

“आधुनिक आर्थिक सिद्धांत को मानने वालों के बीच “गाठ” रूपी विरोधाभास मनुष्यों के दृष्टिकोण को लेकर पैदा होता है जिसकी प्रस्तुती मैकियावेली और हूम ने की है। उदाहरण के लिए”, प्रत्येक व्यक्ति को अपने सभी कार्यों में गुलाम होना चाहिए तथा दूसरी कोई बात नहीं होनी चाहिए, इसके बाद अपने निजी हित को देखना चाहिए। हमें इस सहित से नियंत्रित

होना चाहिए, तथा इसके द्वारा वह अपनी अतृप्त धन-लोलुपता एवं अभिलाषा के बावजूद जनता की भलाई में सहयोग करें।” आज मौटे तौर पर आर्थिक नीति हूम के अधिकतम के अनुसार आगे बढ़ती है।

फिर भी, अरस्तु का दृष्टिकोण हूम या मैकियावेली के सिद्धांत के बिल्कुल विपरीत है। अरस्तु का मानना है कि आदतों एवं सामाजिक गुण विकसित करके अच्छे कानून अच्छे नागरिक बनते हैं” कन्फ्यूशियस सरकार को परामर्श देते हैं कि उनका सरकारी आदेशों से मार्गदर्शन करें, उन्हें शक्तियों से विनियमित करें तथा इससे लोग कानून से बचने एवं बेशर्मा होकर रहने का प्रयास करेंगे। उनका “गुणों” से मार्गदर्शन करें तथा “रीति-रिवाजों” से उन्हें विनियमित करें तथा इससे उनमें शर्मशार होने की भावना पैदा होगी ता “जिम्मेदार” बनेंगे। लोग आदेशों एवं शास्तियों की बजाए “गुण” से निर्देशित एवं “रीति-रिवाजों” से विनियमित होकर “जिम्मेदार” बनते हैं।

कौटिल्य को भारत के मैकियावेली के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसकी उत्पत्ति प्रजातियों और आंतरिक/बाहरी सुरक्षा के संबंध में खंडों के विशेष उद्धरणों पर आधारित अर्थशास्त्र के आंशिक अध्ययन से हुई है। अर्थशास्त्र का वास्तविक अर्थ “अर्थ प्रबंधन” है और यह गहनरूप में शहरी शासन से कर संचालन और वाणिज्य के विविधा स्वरूपों पर विमर्श किया गया है। यह पुस्तक स्पष्टरूप से इसकी शुरुआत में यह अभिकथन करते हुए कि सुशासन ज्ञान की विविधा शाखाओं पर आधारित होता है, बौद्धिक रूपरेखा का निरूपित करता है: वार्ता (आर्थिक नीति), दंडनीति (कानून और इसे लागू करना), अणविकाशिकी (दार्शनिक और नैतिक रूपरेखा) और त्रावी (सांस्कृतिक संदर्भ)। कौटिल्य के लेखों में प्रायः अणविकाशिकी के महत्व की अनदेखी की जाती है। लेकिन वैश्विक दृष्टिकोण में इसे समझना महत्वपूर्ण है। रोचकरूप में यह एडम स्थि को विवित करता है जो “अदृश्य हाथ” का न केवल समर्थन करता है बल्कि “पारस्परिक सद्भावना” के महत्व का भी समर्थन करता है (अर्थात् विश्वास)।

ऐसा ही विचार ‘फ्रैडरिक हाइक’ के लेखन में भी परिलक्षित होता है जो न केवल आर्थिक आजादी का समर्थन करता है बल्कि सामान्य नियमों और सामाजिक मानदंड जो प्रत्येक नागरिक पर लागू होते हैं, का भी समर्थन करता है।

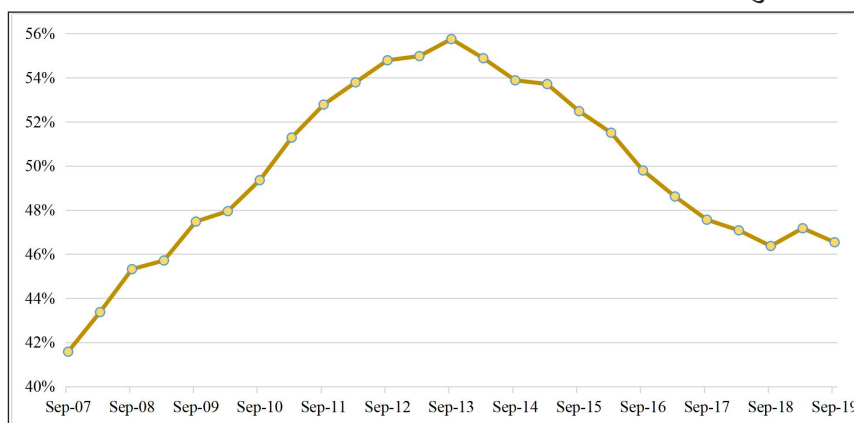
‘अरस्तु’, ‘कन्फ्यूशियस’ और ‘कौटिल्य’, के विचार 21वीं सदी, जिसमें आत्मक केंद्रित लोलुपता को महत्व दिया जाता है में अजीब लग सकते हैं। फिर भी, वैश्विक वित्तीय संकट को बढ़ाने वाले घटक और संकट के बाद के घटक स्पष्टरूप से दर्शाते हैं कि “विश्वसनीय” होने

की आंतरिक प्रेरणा जन कल्याण के रूप में विश्वास पैदा कर सकती है जबकि नितांत लालच की आंतरिक प्रेरणा विश्वास के जनकल्याण को पंगु बना सकती है। उदाहरण के लिए, इस दृष्टिकोण के लिए जिंगल्स (2011) और सैपिंजा और जिंगल्स (2012) का अवलोकन करें कि वैश्विक वित्तीय संकट ने बाजार की अर्थव्यवस्था में विश्वास की विफलता की एक शानदार मिसाल का प्रतिनिधित्व किया है।

एक अर्थव्यवस्था में विश्वास की महत्ता को देखते हुए विशेषतः लेन देन लागत अर्थशास्त्र अथवा अपूर्ति निविदाओं पर साहित्य के आर्थिक सिद्धांतों पर ध्यान दिलाने की यथोचित अपेक्षा की जाती है। नोबेल पुरस्कार विजेता ओलिवर विनियमसन जिन्होंने लेन देन लागत अर्थशास्त्र में अध्ययन किया है, स्पष्ट रूप से बताया है कि आर्थिक गतिविधि में विश्वास जैसी कोई चीज नहीं है: यह उत्तम पर निरर्थक है और वाणिज्यिक विनियम का वर्णन करने के लिए “विश्वास” शब्द का प्रयोग करना भ्रामक हो सकता है जिसके लिए अधिक कुशल विनियम के समर्थन में लागत-प्रभावी संरक्षण पर विचार किया गया है। गणनात्मक विश्वास समय सीमा में अंतर्विरोध है (विलियमसन, 1993 पृष्ठ 463)। विलियमसन ने प्रोत्साहन और शासन संरचना पर आधारित गणनात्मक सहयोग की भूमिका को स्वीकार किया: कूटनीति पूर्वक झपटना अंतर्निहित नहीं है यदि आर्थिक एजेंटों के पास आर्थिक संबंधों की दूरदर्शी समझ है जिसमें वे अदूरदर्शी कूटनीति का कारण बनने की अपेक्षा उसका हिस्सा बनते हैं। (विलियमसन, 1993, पृष्ठ 474)।

उन्होंने तर्क दिया कि गणनात्मक सहयोग की अधिक संभावना तक है जब एजेंटों के पास अधिक समय सीमा है। जो विश्वास के लिए सही है। विश्वास पर अपूर्ण अनुबंध रचना के समान ध्यान दिया जाना अपेक्षित है। अपूर्ण संविदात्मक नमूनों का सैनफोर्ड ग्रासमैन, ओलिवर हार्ट, और जॉन मूरे द्वारा संचालन किया गया। वे तर्क देते हैं कि अनुबंध, की जाने वाली हर संभवत संभावना को निर्दिष्ट नहीं करते। अतः विश्वास को ऐसे उदाहरण के रूप में लेना तर्क संगत होगा क्योंकि आर्थिक एजेंट केवल अपूर्ण अनुबंधों में जोखिम प्रवेश कर रहे होंगे यदि वे अप्रत्याशित परिणामों, जो आर्थिक प्रतिफल के समुचित वितरण से संबंधित हों, को अनुकूल बनाने हेतु अपने प्रतिस्थनी पर विश्वास करते हैं। तथापि सैद्धांतिक अर्थशास्त्र में, अपूर्ण अनुबंध का केवल निम्नलिखित तीन प्रकार से विश्लेषण किया गया है: संपत्ति अधिकार के रूप में, लेनदेन लागत के रूप में, स्व-चालित अंतर्निहित अनुबंधों के रूप में। विश्वास की धारणा का सही तर्क संगतता के अनुमान के कारण अपूर्ण अनुबंधों अथवा उपर्युक्त तीन प्रकार में से किसी एक का आर्थिक सिद्धांत में कोई स्थान नहीं है। पूरे तौर पर तर्कसंगत आर्थिक एजेंटों के पास पूर्ण दूरदर्शिता है और इसी लिए गणना योग्य जोखिम अनिश्चितता की समस्या को कम किया जाए तथा चूंकि विलियमसन चह तर्क देते हैं कि गणनात्मक विश्वास समय सीमा में अंतर्विरोध है। साइमन (1982) यह तर्क देते हैं कि तर्क संगतता सीमित है क्योंकि हमारे सोचने की क्षमता, उपलब्ध सूचना, और समय की सीमाएं हैं।

चित्र 20: भारतीय गैर-खाद्य ऋण में कारपोरेट ऋण का अनुपात



स्रोत- आर बी आई

ऋण दोष

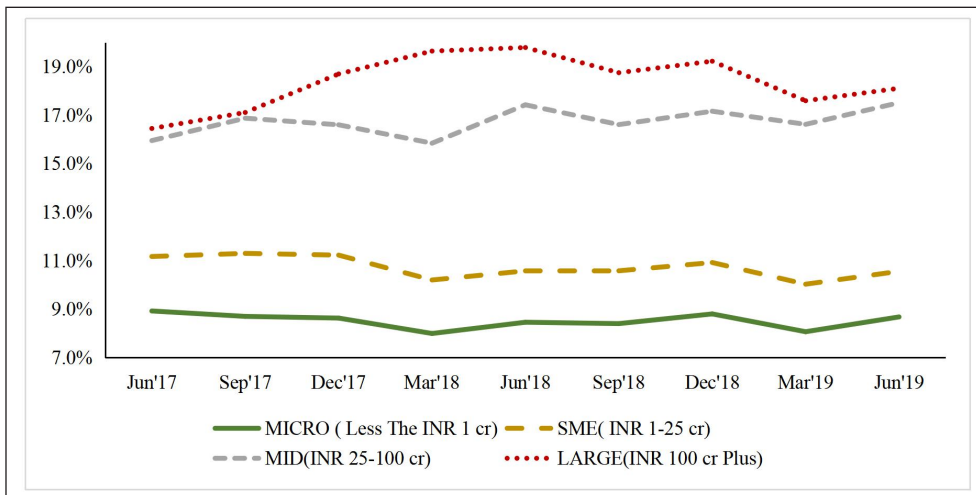
1.32 समीक्षा के अध्याय 3 में बड़े कारपोरेशन द्वारा अपने ऋणों में जान बूझ कर दोषी बनने के सक्ष्य मिलते हैं; इसके अतिरिक्त जान बूझ कर की गई ऐसी चूक जो संबंधित पार्टी के लेन देन के प्रयोग से और उसके प्रकटीकरण की कमी से यह संबंधित हो। सितम्बर 2007 और सितम्बर 2013 के दौरान कारपोरेट क्रेडिट में अभूतपूर्व और विषम वृद्धि के दौरान जमा में तेजी और मंदी की यह घटना प्रकट होती है और 2013 के पश्चात् कमी जैसा कि चित्र 20 में दिखाया गया है। चित्र 21

यह दर्शाता है कि बड़े ऋणों (100 करोड़ भारतीय रु. से अधिक) पर चूक की दरें अधिकांताम थीं।

लेखा परीक्षा असफलताएं

1.33 जिस प्रकार से किसानों द्वारा फसल जलाने के कारण दूषित वायु के माध्यम से सभी नागरिकों हेतु नकारात्मक माहौल बनाता है उसी प्रकार जब एक कारपोरेट जानबूझकर गलत वित्तीय सूचना देता है तो वे अर्थव्यवस्था में फर्मों के वित्तीयनों में सभी घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों हेतु निम्न विश्वास का नाकारात्मक

चित्र 21: ऋण के आकार द्वारा अनर्जक आस्थियां (एनपीए)



स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल-सिडबी

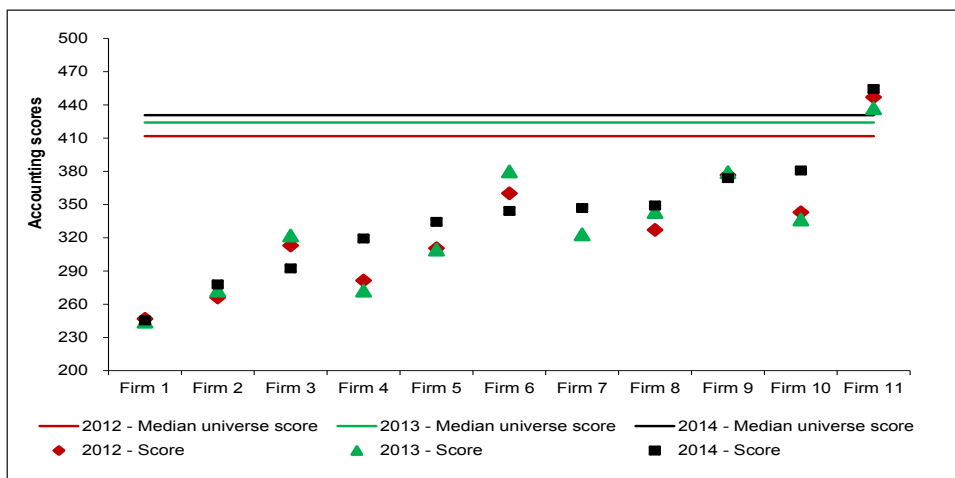
माहौल बनाकर उन्हें नुकसान पहुंचता है। उधार देने वाले जिनसे अन्य वित्तीय प्रणाली मध्यस्थ और बड़े रूप में अर्थव्यवस्था शामिल हैं, वे कुछ की कारस्तानियों से आई नकारात्मक बाह्य प्रभाव से पीड़ित होते हैं।

1.34 इसी प्रकार से जब एक कॉर्पोरेट अपने ऋणों पर जानबूझकर गड़बड़ी करता है वे के अपने बैंक को नुकसान पहुंचाता है और सभी अन्य कॉर्पोरेटों तक नकारात्मक प्रभाव डालता है क्योंकि वे विश्वास की कमी के कारण साख की कम आपूर्ति पाते हैं। जैसा कि चित्र 20 से देखा जा सकता है, गैर-खाद्य क्रेडिट में कॉर्पोरेट लानों का अनुपात सितम्बर 2007 से हैं वर्षों

तक एक न्यूनाधिक बढ़त दर्शाने के बाद सितम्बर 2013 से घटता रहा है। जैसा कि समीक्षा के अध्याय 3 में जानबूझकर गलतियां करने वालों पर चर्चा की गई थी कुछ विवेकहीन प्रतिपालकों के अवसरपरस्त व्यवहार के कारण अन्य सभी फर्मों अधिक जोखिम से उपजे उच्चतर क्रेडिट प्रसार के माध्यम से इसका खामियाजा भुगतते हैं। मुफ्तखोरी की समस्या के परिणामस्वरूप उच्चतर क्रेडिट प्रवाह और अधिक कॉर्पोरेटों को अपने स्वयं के लोन बाध्यकाओं पर जानबूझकर गड़बड़ी उस को उकसाता हैं।

1.35 कुछ विवेकहीन प्रवर्तकों के अवसरवादी व्यवहार

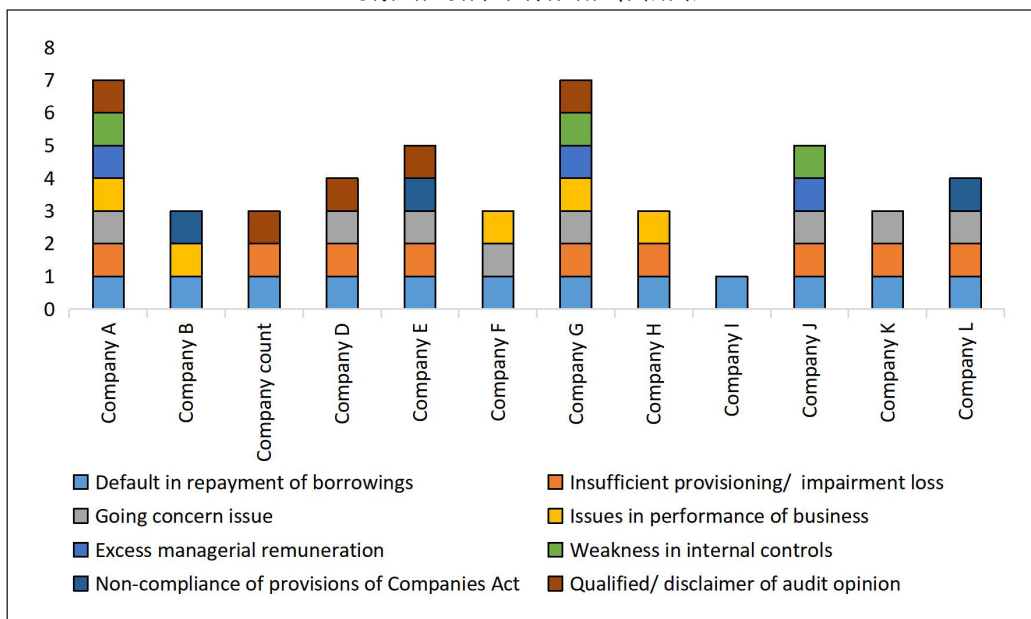
चित्र 22: बड़े दोषियों के एकाउंटिंग क्वालिटी स्कोर



स्रोत: भारतीय ऋण शोधन तथा दिवालियापन बोर्ड (आर बीआई)

चित्र 23: बड़े दोषियों द्वारा वित्तीय विवरणों में खुलासे:

अग्रणी और विलंबित संकेतक



स्रोत: कंपनी वित्तीय विवरण और समीक्षा आंकलन

की आम श्रंखला वित्तीय रूप से गलत रिपोर्टिंग और जानबूझकर गड़बड़ियों दोनों में दिखाई देती है। जून 2017 में, भारतीय रिजर्व बैंक ने ऐसी बारह कंपनियों की पहचान की है। जिसमें भारत के कुल अनर्जक आस्तियों (एनपीए) का 25 प्रतिशत शामिल होता है। जैसा कि चित्र-22 में दर्शाया गया है बड़ी सूचिबद्ध एनपीए और कुछ जानबूझकर गलती करने वाली की लेखा योग्यता वर्ष 2012, 2013 और 2014 में अन्य समान रूप से सूचिबद्ध कॉरपोरेटों की लेखा योग्यता से काफी कम है। अध्याय 06 इस बात का साक्ष्य प्रस्तुत करता है कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में नए निजी क्षेत्र के बैंकों की तुलना में एनपीए का कई अधिक अनुपात है। परिणामतः जानबूझकर गड़बड़ी करने वाले ने कर दाताओं के रुपए को धोखे से ले लिया।

1.36 इसी प्रकार, इस विश्वास के पटल पर भी बाजार विफल हुआ है कि आडिटर अपने ग्राहकों खातों की भरोसेमंद जांच करते हैं। समीक्षा ने बड़े अनुसूचित एनपीए और जानबूझकर दोषियों का विश्लेषण किया गया है ताकि यह जांच की जा सके कि क्या ऑडिटर ने जानबूझकर सामग्री का अस्पष्ट खुलासा किया है। यह संकेतक ऑडिटर्स द्वारा आदर्श रूप से चिन्हित

किए जाने चाहिए। अग्रणी संकेतकों को तालिका (1) में दिखाया गया है। और पीछे रहने वाले संकेतकों को तालिका 2 में

1.37 चित्र 23, बारह बड़े दोषियों में से केवल एक ने एक संकेतक का खुलासा किया है जबकि अधिकतरों ने आठ अग्रणी और विलंबित संकेतकों में से तीन और चार संकेतकों का खुलासा किया है। अतः 2011-13 के लगभग कुछेक बड़े संदेहात्मक प्रोत्सहिकों के कारण विश्वास की बाजार विफलत हुई। इसके परिणामस्वरूप बैंकिंग सिस्टम में बहुत बड़ी गैर-निष्पादन परिसंपत्ति (एमपी) एकत्र हुई, विशेषकर सार्वजनिक क्षेत्र बैंकों (पीएसबी) में यह विश्वास की विफलता कुछेक मुख्य गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एमबीएफसीएस) तक भी निरंतर फैलती गई। जब लिक्विड डेब्ट मैनुअल फंड के निवेशक अपने निवेश को नकद पाने के लिए सामूहिक रूप से चल पड़े तो इससे समूहों एनबीएफसी वित्त क्षेत्र में एक डर पैदा हो गया जिसके कारण एमबीएफसी क्षेत्र में संकट छा गया। यह अध्याय 7 में समझाया गया है।

विश्वास संपोषण ऐसी नीतियों को दूर रखना जिससे

तालिका 1: दबाव के मुख्य संकेतक अथवा संबंधित दोष

अग्रणी संकेतक	व्याख्या
व्यापार के निष्पादन में मुद्दे	<ul style="list-style-type: none"> • कंपनी के ऑपरेशनल नकद प्रवाह पर गहन दबाव • टर्नओवर और प्रचालन मार्जिन में गिरावट • अनुबंध बाध्यता की गैर-अनुपालनता • बैंक एकाउंटों में गैर मिलान/गड़बड़ी • आंतरिक कंट्रोल में कमजोरी
आंतरिक नियंत्रण में कमजोरी	<ul style="list-style-type: none"> • कोई आंतरिक ऑडिट विभाग नहीं • प्रचालन में हस्तक्षेप
कंपनी एक्ट के प्रावधानों का गैर-अनुपालन	<ul style="list-style-type: none"> • कंपनी एक्ट (2013), नियम, विनियम और मार्गदर्शन के प्रावधानों के गैर-अनुपालन से संबंधित सचिवालय ऑडिट के अंतर्गत उठाए गए मुद्दों
ऑडिट ओपीनियन का क्वालिफाईड डिस्क्लेमर	<ul style="list-style-type: none"> • ऑडिट रिपोर्ट में क्वालिफाईड ओपीनियन। • ऑडिट ओपीनियन के लिए एक आधार प्रदान करने के लिए एक पर्याप्त समुचित ऑडिट ओपीनियन की अक्षमता के कारण ओपीनियन का डिस्क्लेमर
अत्यधिक प्रबंधकीय पारिश्रमिक	<ul style="list-style-type: none"> • बैंकों, वित्तीय संस्थानों और डिबेन्चर होल्डरों को ऋणों के पुर्नभुगतान (मूलधन और ब्याज) में दोष। • ऋणदाताओं द्वारा एनपीए के रूप में ऋण वर्गीकरण

तालिका 2: दबाव अथवा आसन्न दोष के विलंबित संकेतक

बैंकिंग संकेतक	व्याख्या
लिए गए धन के पुर्नभुगतान में दोष	<ul style="list-style-type: none"> • बैंकों, वित्तीय संस्थाओं और डिबेन्चर होल्डरों को ऋणों के पुर्नभुगतान में दोष • ऋण देने वाले द्वारा एनपीए के रूप में ऋण वर्गीकरण
अपर्याप्त प्रावधान/हानि	<p>नहीं/अपर्याप्त प्रावधान निम्नलिखित:</p> <ul style="list-style-type: none"> • संबंधित पार्टियों के ऋणों/कॉरपोरेट गॉरंटी की वसूलियता • संबंधित पाटियों में किए गए निवेश की वसूलियता • उधारकर्ताओं से शेष बकाया के पुष्टिकरण में त्रुटि • दीर्घावधि ऋण एवं अग्रिम
चल रहे संबंधित मुद्दे	<p>संग्रहित हानियों के परिणाम से कुल कारोबार में कमी आई।</p> <ul style="list-style-type: none"> • मौजूदा परिसम्पत्तियों से अत्यधिक चालू दायित्व • आवर्ती घाटे/कैश घाटे • नकारात्मक कुल कारोबार • प्राथमिक व्यापार गतिविधियों का निलंबन होना

अंतर्गत प्रेरणा दुष्प्रभावित होती है।

विश्वसनीयता बढ़ाना: अर्न्तभूत प्रोत्साहन को खत्म करने वाली नीतियों को हटाना।

1.38 वैश्विक वित्तीय संकट की ही भांति 2011-13 की के दौरान और इसके परिणामों को अपनाने से अर्थव्यवस्था में विश्वास की कमी हुई। इसे ठीक करने की जरूरत है, इस बात को समझते हुए कि विश्वास का पुनः निर्माण करने में समय लगेगा। हमारी परंपरा अर्थव्यवस्था संपत्ति सृजकों को घटकों के रूप में पूजती है। लेकिन थिरूवालायूवर में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि यह केवल तभी होता है जब संपत्ति

செப்பம் உடையவன் ஆக்கக் குறி சிதைவின்றி
எச்சத்திற் கேடமாப்பு உடைத்து.

“The just man's wealth unwasting
shall endure,

And to his race a lasting joy ensure.”

– *Thirukural, Chapter 12, verse 112.*

1.39 विश्वास वह गोंद है कि जो कि हमारी अर्थव्यवस्था को पारंपरिक रूप से बांधता है तथा हमारी अर्थव्यवस्था की भलाई में एक आवश्यक घटक है। विश्वास बैंकिंग तथा वित्तीय बाजार की कार्यप्रणाली में भी एक प्रमुख घटक है। यदि विश्वास ज्यादा हो तो अवसरवाद की बढ़ी हुई संभावना के बावजूद आर्थिक गतिविधियाँ फलफूल सकती हैं। फिर भी, विश्वास कि कार्यात्मक रूप से उपयोगी है’ इसका अर्थ यह नहीं होता कि यह आवश्यक रूप से बढ़ेगी। हमें उन घटकों को पहचानने की आवश्यकता है कि जो कि मौकापरस्ती व्यवहारों में अंतर्निहित है तथा उस प्रक्रिया पर विचार करना चाहिए जिससे लगभग 2011-13 बाजार में विफलता हुई थी से और उसके परिणाम समाज को सहने पड़े थे।

1.40 जैसाकि सेडल (2012) ने मान लिया है, अच्छा व्यवहार तो आंतरिक प्रेरणा से ही उपजता है। और यह बाजार अर्थव्यवस्था के प्रभावी रूप से कार्यकरने का महत्वपूर्ण संपूरक है। दूसरे शब्दों में, बाजार के अदृश्य समर्थन में एक सहायतार्थ नैतिक समर्थन

की आवश्यकता होती है जो कि अर्थव्यवस्था में विश्वास को प्रोत्साहित करता है। इस संदर्भ में, नीति निर्माताओं को यह पहचानने की आवश्यकता है कि सार्वजनिक वस्तुओं, जैसे कि विश्वास, के अपर्याप्त प्रावधानों अधिकतर आंतरिक प्रेरणा से उपजे पुरस्कार तथा अच्छे व्यवहार की कमी होते के कारण हैं। जब बैंक कारपोरेट को पहचानते हैं जो अपने ब्याज एवं मूलधन गैर मौद्रिक तरीकों में समय में अदा करते हैं यह आंतरिक प्रेरणा को मजबूत बनने के लिए सहायता करता है। ऐसे संकेतों को अधिक प्रोत्साहनों, जैसे बढ़ी हुई साख सीमा अथवा पुरस्कार विजेताओं के लिए ब्याजदर में कटौती के साथ नहीं जोड़ना चाहिए अन्यथा लघु अवधि में पुरस्कार विजेता व्यवहार में भविष्य बेहतर क्रेडिट उपलब्धता या आर्थिक प्राप्ति के लिए कथित रूप से चाटुकारिता हो जाएगी।

Reducing Information Asymmetry

1.41 किसी आर्थिक विनिमय में ऐसा महत्वपूर्ण घटक जो अवसरवादी सामर्थ्य को बढ़ाता है वह सूचना असममिति है। ऐसे अवसरवाद की वृद्धि को प्रवर्तन प्रणाली के मानकीकरण के माध्यम से और जन डाटाबेस के माध्यम से उपचारित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, 2014 पूर्व स्वेच्छाचारी चूक के मामलों में संबंधित लेनदार की वित्तीय सूचना तक की नापहुंची को सूचना असममिति का चालक कहा जा सकता था। पिछले पांच वर्षों में कारपोरेट लेनदानों के लिए ऋण की सूचना तक की पहुंच में अच्छी वृद्धि हुई है। अब इस बात पर बहस की जा सकती है कि यदि भारतीय अर्थव्यवस्था के पास आंकड़ों की अवसंरचना, जैसे सीआरआईएलसी (सेन्ट्रल रिपोजीटरी ऑफ इनफोरमेशन आन लार्ज कारपोरेट) 2014 पूर्व के दौरान ऋण उछाल, सूचीबद्ध एनपीए के विस्तार को बहुत कम कर सकती थी। इस सूचना ने उधरदाताओं को अन्य बैंकों या एनबीएएफसी के द्वारा चिन्हित एनपीए कोरपोरेट्स की सीमा को निर्धारित करने की चेतावनी दी है। इस सूचना की उपलब्धता ने पुरी बैंकिंग प्रणाली में एनपीए को कम किया है क्योंकि जब कोई लेनदार किसी एक देनदार के साथ चूक करता है तो अन्य देनदार अपने ऋण को चूक

चिन्हित कर सकते हैं और इसलिए को ला सकते हैं। यह संभव है क्योंकि सभी कारपोरेट ऋण कागजात में अनुप्रस्थ चूक के प्रावधान होते हैं? यह अन्य बैंकों द्वारा उन व्यापारियों को ऋण सीमित कर सकता था अन्यथा। इस बात से परिचित नहीं होते कि अन्य वित्तीय संस्थाओं ने उसे एनपीए घोषित कर दिया है। ऐसे सार्वजनिक डाटाबेस सूचना असमिति को घटाते हैं।

1.42 चित्र 24 दर्शाता है कि 2014 में एनपीए पर दी हुई सूचना को देनदारों के बीच सांझा करना अतिन्यून था है। इस सूचना को सांझा करना एनपीबी की तुलना में पीएसबी के बीच सांझा करना बेहतर था है, लगभग एक चौथाई खातों को अन्य बैंकों के द्वारा एनपीए घोषित करने पर अन्य बैंकों ने भी वाद की संभावना एनपीए खातों में वर्गीकृत कर दिया था। कुछ ही वर्षों में यह हिस्सा बढ़कर 95 प्रतिशत हो गया। इसमें अवसर वा की संभावना को कम कर दिया है और वित्तीय संस्थाओं के ऋणों के क्रियाकलापों में अधिक विश्वास को प्रेरित किया है।

1.43 एक संबंधित मुद्दा यह है कि चूक को स्वेच्छाचारी या अनचाही कहा गया है। बैंकिंग क्षेत्र में सांझा डाटाबेस और आरोपण समस्या के बीच तनावग्रस्त चूकों और स्वेच्छाचारी चूकों को स्वेच्छाचारी सार्वजनिक चूको की सूची बना कर सुलझा दिया गया है। इस प्रकार की नामोल्लेखन ओर शर्मनाक स्वेच्छाचारी चूको ने ऐसे अपराधियों को बैंकिंग क्षेत्र से ऋण की गैर-उपलब्धता को स्वीकृति दे दी है।

पर्यवेक्षण की गुणवत्ता को बढ़ावा

1.44 अर्थव्यवस्था का एक अच्छा निर्णायक बनते हुए सरकार को नैतिकता के भाव से सहयोग देना होगा। निर्णायक का कार्य केवल तथ्यों से अवगत करना नहीं होता बल्कि यदि लोग नियमों का पालन नहीं कर रहे हैं तो अवसरवादी व्यवहार्य की पहचान करना भी होगा। जैसे स्वेच्छाचारी चूको, गलत वित्तीय सूचना जैसे भ्रष्टाचार और बाजारी चालबाजी को जल्दी ही पकड़ना होगा क्योंकि यह वह दीमक होता है वित्तीय बाजारों में निवेशकों के विश्वास को खत्म कर देता है, विनिवेश को समाप्त कर महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विनिवेश

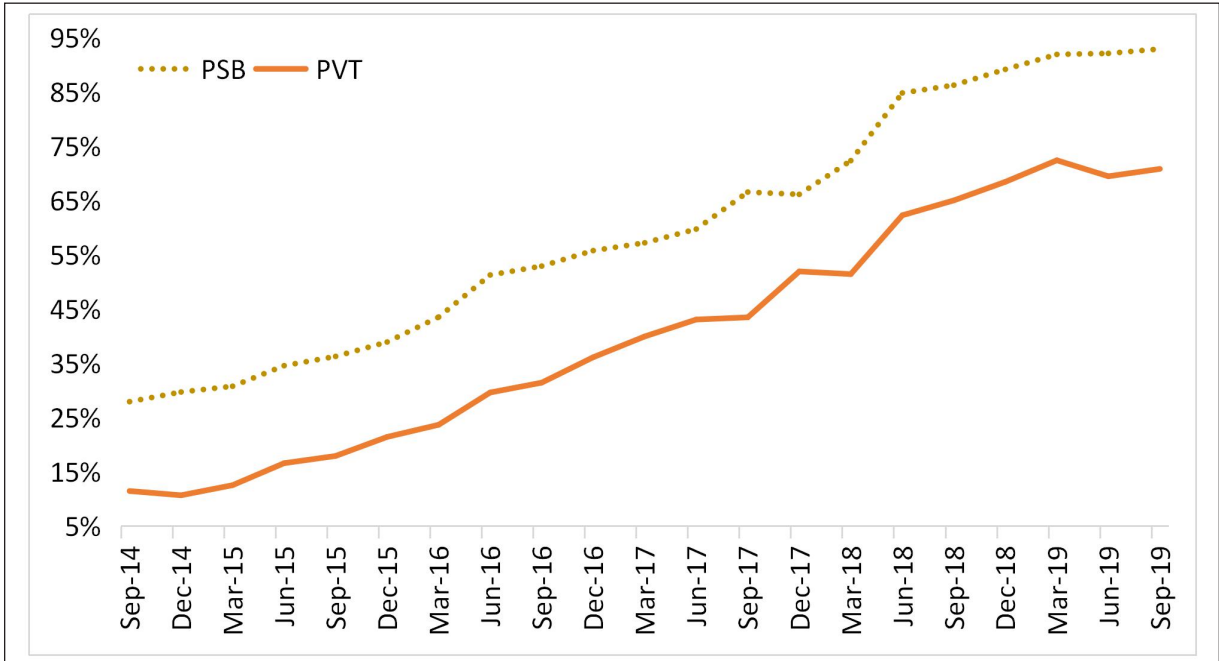
को निकाल देता है। यह न्यायसंगत और कानून का पालन करने वाली बाजार सहभागिता को हटा देता है। यह एक अभिशाप है जो विनिवेश को हटा देता है और तत्पश्चात अर्थव्यवस्था से नौकरियों को। वह जो लोग धन का अर्जन नैतिकता से करते हैं, उनके लिए तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारा वित्तीय बाजार अच्छा और पारदर्शी हो। इस परिस्थिति में राज्य की सक्षम निर्णायक की भूमिका को भी नकारा नहीं जा सकता।

1.45 अमेरिकी फेडरल आयोग के पास प्रत्येक दो फर्म के लिए एक कर्मचारी है, जबकि भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग के पास प्रत्येक 38 सूचीबद्ध फर्मों के लिए एक कर्मचारी है। प्रतिभूतियां और विनिमय आयोग के पास प्रत्येक सूचीबद्ध कम्पनी के लिए एक कर्मचारी है। इसके विपरीत, सेबी के पास छः सूचीबद्ध कम्पनियों के लिए एक कर्मचारी है। वास्तव में, कारपोरेट वित्त के विभागों में एसईसी के पास सेबी की तुलना में 15 गुना अधिक कर्मचारी है। इस संसाधनों की कमी को घटा कर सरकार की निर्णायक की भूमिका को सबल करना सभी धन अर्जकों के लिए समतापूर्ण व्यवहार संभव बना देगा।

1.46 एस ई सी और एफटीसी व्यापक रूप से आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स और मशीन लर्निंग को पकड़ने और बाजारी भ्रष्टाचार को उजागर करने के लिए प्रयोग कर रहे हैं ताकि हमारा कोई भी विनियामक गलत न कर सके। सीमित संसाधनों के विनियामक के परिणामस्वरूप बाजार अर्थव्यवस्था का पर्यवेक्ष बुरी तरह से प्रभावित होता है जिससे बाजारी दुष्प्रवहार बढ़ता है। अर्थव्यवस्था तब तक 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकती जब तक बाजारी भ्रष्टाचार को हटाना एवं यथेष्ट पर्यवेक्षण नहीं होता।

इसलिए, हमारे विनियमको की गुणवत्ता और संख्या में महत्वपूर्ण बदलाव (सीसीआई, आरबीआई, सेबी, आईबीबीआई) तकनीकी और विश्लेषण में महत्वपूर्ण विनिवेश एक साथ लाने की आवश्यकता है। यह नैतिकता भाव के प्रभाव को बढ़ाते हुए अधिक धन अर्जन के लिए मदद करेगा।

चित्र 24: एनपीए के लेखाओं के अनुसार एनपीए में पहले से ही टैग हुए देनदारों का अनुपात (अन्य बैंक के द्वारा)



Source: TransUnion CIBIL.

अध्याय एक नजर में

- विदित आर्थिक इतिहास के तीन चौथाई से ज्यादा हिस्से पर भारत का वैश्विक आर्थिक शक्ति पर प्रभुत्व रहा है। ऐसे प्रभुत्व की व्यक्ति डिजाइन से होती ना कि अनिश्चितता से। भारत की आर्थिक प्रभुत्वा को दौरान अर्थ सृजन के लिए अर्थव्यवस्था बाजार के अदृश्य हाथो पर विश्वसनीय हाथो पर विश्वास करती है। विशिष्ट रूप से, बाजारो के अदृश्य हाथ, जैसा कि आर्थिक लेनेदेने की खुलेपन में दर्शाया गया है, उसको विश्वसनीय हाथों के साथ जोड़ा गया जो कि नैतिक और दार्शनिक आयामों में पोषित अंतर्भाग प्रेरणा में पहुंचाती है लगभग आधी शताब्दी पहले, स्पेन्गलर (1971) ने यह तथ्य कौटिल्या के अर्थशास्त्र जो कि अर्थ व्यवस्था में कीमों की भूमिका को दर्शाता है।
- यह समीक्षा वर्तमान प्रमाणों के लिए हमारी परंपरावादी सोच में बताए गए आर्थिक मॉडल के दोनों स्तंभों को भारतीय अर्थव्यवस्था की उदारता को सहायता देते है। भारत की जीडीपी और उदारीकरण से पूर्व प्रति व्यक्ति जीडीपी में घांताकी वृद्धि स्टोक बाजार में अर्थ सृजन के साथ होता है। इसी प्रकार से, अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के प्रचुर लाभों को जो बाजार के अदृश्च हाथों को योग्य बनाने को दर्शाता है। वास्तव में, समीक्षा यह स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि वो क्षेत्र जो स्वतन्त्र है वह बन्द हुए क्षेत्र की तुलना में तेजी से महत्वपूर्ण ढक से बढ़े है। 2011-13 के दौरान वित्तीय क्षेत्र में की घटनाएं और उदाहरण के दुसरे स्तंभ का अनुसरण करते हुए - विश्वास के हाथों को अदृश्य हाथों की सहायता की आवश्यकता है। वास्तव में, वैश्विक आर्थिक मंदी को देखते हुए, अर्थव्यवस्था साहित्य की उभरती हुई शाखा को अदृश्य हाथों का मजबुत बनाने के विश्वसनीय हाथ की आवश्यकता को पहचाना है।
- यह समीक्षा बताती है भारत की 5 ट्रिलियन अमेरिकी डालर की अर्थव्यवस्था बनाने की अभिलाषा बाजार के अदृश्य हाथों को मजबुत बनाने और इसको विश्वसनीयत हाथों की सहायता पर निर्भर करती है। व्यापार अनुकूल नीतियों को प्रेरणा देने के लिए अदृश्य हाथों को मजबुत होना पड़ेगा। (1) नये प्रवेशक के लिए समान अवसर प्रदान कराना निष्पक्ष प्रतिस्पर्ध और कारीबारी सुगतमा को बढ़ाना प् ऐसे नीतियों को हटाना जो बाजार को अनावश्यक रूप से सरकारी हस्तक्षेप के द्वा रा कमजोर कर देती है। प् नौकरी सृजन के लिए व्यापार बढ़ाना और प् भारतीय अर्थव्यवस्था के आकर के अनुपात में बैंकिंग क्षेत्र को दर्शातापूर्ण बढ़ाना। सार्वजनिक वस्तु के विश्वास के रूप में जो कि अधिक प्रयोग से और बढ़े के सिद्धांत से परिचय करना, समीक्षा नीतियों में पारदर्शिता लाने और आकड़ों और तकनीकी के दक्ष प्रयोग से सार्वजनिक वस्तु को बढ़ाने का सुझाव देता है।

संदर्भ

- Aristotle. 1962. *Nicomachean Ethics*. Translated by Martin Ostwald. Indianapolis: Bobbs-Merrill.
- Baker, George, Robert Gibbons, and Kevin J. Murphy. "Relational Contracts and the Theory of the Firm." *The Quarterly Journal of Economics* 117.1 (2002): 39-84.
- Bénabou, Roland, and Jean Tirole. "Incentives and prosocial behavior." *American Economic Review* 96.5 (2006): 1652-1678.
- Coase, Ronald (1960), "The Problem of Social Cost", *Journal of Law and Economics*, The University of Chicago Press, Vol. 3 (Oct., 1960): 1-44.
- Confucius. 2007. *The Analects of Confucius*. Translated by Burton Watson. New York: Columbia University Press.
- Deodhar, Satish (2018), "Indian Antecedents to Modern Economic Thought", Working Paper, Indian Institute of Management Ahmedabad, No WP 2018-01-02.
- Gambetta, D. (1988). "Can we trust trust?". In Gambetta, D. (Ed.), *Trust*. Oxford: Blackwell, 213-38.
- Gneezy, Uri and Aldo Rustichini. (2000a). "Pay Enough or Don't Pay At All." *Quarterly Journal of Economics*, 115(3): 791-810.
- Gneezy, Uri and Aldo Rustichini. (2000b). "A Fine Is a Price." *Journal of Legal Studies*, 29(1): 1-18.
- Gneezy, Uri, Stephan Meier, and Pedro Rey-Biel (2011). "When and Why Incentives (Don't) Work to Modify Behavior." *Journal of Economic Perspectives*, Vol. 25, No. 4, 191-210.
- Guiso, L., P. Sapienza, L. Zingales (2004), "The role of social capital in financial development", *American Economic Review*, 94, pp. 526-556.
- Hume, David. 1964. "David Hume: The Philosophical Works. Edited by Thomas Hill Green and Thomas Hodge Grose. 4 vols. Darmstadt: Scientia Verlag Aalen. Reprint of the 1882 London ed.
- Maddison A (2007), *Contours of the World Economy I-2030AD*, Oxford University Press, ISBN 978-0199227204.
- Maslow, A. H. (1943). A theory of human motivation. *Psychological Review*, 50(4), 370-96.
- Meier, Stephan (2007a), "Do Subsidies Increase Charitable Giving in the Long Run? Matching Donations in a Field Experiment." *Journal of the European Economic Association*, 5(6): 1203-22.
- Meier, Stephan (2007b), "A Survey of Economic Theories and Field Evidence on Pro-Social Behavior." In *Economics and Psychology: A Promising New Cross-Disciplinary Field*, ed. Bruno S. Frey and Alois Stutzer, 51-88. Cambridge: MIT Press.
- Olivelle, Patrick (2013), *King, Governance, and Law in Ancient India: Kauṭilya's Arthaśāstra*, Oxford UK: Oxford University Press, ISBN 978-0199891825.
- Sandel, Michael J. (2012). *What Money Can't Buy: The Moral Limits of Markets*. New York: Farrar, Straus and Giroux.
- Sanyal, S. (2016). *The Ocean of Churn*. Penguin.

Sapienza, Paola, and Luigi Zingales. "A trust crisis." *International Review of Finance* 12.2 (2012): 123-131. Shamasastri, R. "Kautilya's Arthashastra (translated in English)." Sri Raghuvir Printing Press, Mysore (1956).

Shamasastri, R. "Kautilya's Arthashastra (translated in English)." Sri Raghuvir Printing Press, Mysore (1956).

Sihag, Balbir S. "Kautilya's Arthashastra: A Recognizable Source of the Wealth of Nations." *Theoretical Economics Letters* 6.1 (2016): 59-67.

Spengler, J.J. 1971. "Indian Economic Thought," Duke University Press. Durham.

The Road to Serfdom, Friedrich Hayek, University of Chicago 1944

Williamson, Oliver E. "Calculativeness, trust, and economic organization." *The Journal of Law and Economics* 36.1, Part 2 (1993): 453-486.

Zingales, Luigi. "The role of trust in the 2008 financial crisis." *The Review of Austrian Economics* 24.3 (2011): 235-249.